ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक,
साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

पंछी प्यासा करे पुकार,
मिल जाए कोई जल की धार।

वर्षः 69 अंकः 04 अप्रैल, 2018

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2075 वैसाख की अमावस्या

लगेगी-15.04.2018, रविवार प्रात: 8.37 बजे
उतरेगी-16.04.2018, सोमवार, प्रात: 7.26 बजे

सम्वत् 2075 प्रथम ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी-14.05.2018, सोमवार सायं 7.46 बजे
उतरेगी-15.05.2018, मंगलवार सायं 5.17 बजे

सम्वत् 2075 द्वितीय ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी-12.06.2018, मंगलवार प्रात: 4.33 बजे
उतरेगी-13.06.2018, बुधवार मध्यरात्रि 1.12 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-72	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
संस्कार और संस्कृति	9
बिश्नोई सभा, हिसार ने शुरू की कैरियर गाइडेंस एवं मेट्रीमोनियल सेवा	11
गुरु जाम्भोजी के अनुयायी हरदा के बिश्नोई	12
जम्भेश्वर महादेव मन्दिर, पुरी	16
बधाई सन्देश	22
जांभाणी हरजस: दुर्गादासजी कृत हरजस	23
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	24
सन्तों की दृष्टि में लोक-मंगल	25
गुरु-मंत्र का महत्त्व	27
बाल कविताएँ: मिस्कॉल, बंद करो ये धंधे, होम, रीत	29
पर्यावरण रक्षन्तु: जलवायु परिवर्तन और कृषि	30
मार्मिक लघुकथा: नालायक	33
एक अनूठी पहल	34
कैरियर: फूड प्रोडक्शन मैनेजर की बढ़ रही है मांग	35
जॉभाणी कुण्डलियां	36
सात समुद्र पार भी हैं श्री गुरु जाम्भोजी के अनुयायी	37
जांभोळाव मेला आयोजित	38
गुड़ी पड़वा पर बिश्नोई समाज ने मुम्बई में निकाली पर्यावरण रैली	39
सबदवाणी के अंग्रेजी संस्करण का हुआ विमोचन	40
श्री जम्भेश्वर मंदिर पंचकूला का 13वां स्थापना....	42

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-72

दोहा

वेद पुराणे जो लिख्या, पाप पुण्य बहु देव।
मही देव ऐसे कही, कहै जम्भगुरु भेव।
च्यार वरण में अधिक है, ब्राह्मण वरण सुजाण।
वांचै वेद पुराण कूं, मेटै आवा जांण।

पूर्व देश के रहने वाले विद्वान पण्डित काशीदास ने कन्नौज कालपी में बिश्नोइयों से जाम्भोजी के बारे में महिमा सुनी थी और शास्त्रार्थ करने के लिये वहाँ से चलकर सम्भराथल पहुँचा, कुछ दूरी से ही हवन की महकार आने लगी, जिससे वैदिक परंपरा के ऋषियों जैसा वातावरण उपस्थित हुआ। इस प्रकार के दिव्य वातावरण से पंडित अति प्रसन्न हुआ और समीप में बैठकर कहने लगा कि हे देव! वेद पुराणों में पाप पुण्य की व्याख्या बड़े ही सूक्ष्म ढंग से की है तथा वेदों में चारों वर्णों से वेदपाठी ब्राह्मण ही सर्वश्रेष्ठ बताया है। जो वेद को पढ़ता है, उसका आवागमन मिट जाता है। इस विषय में आपका क्या विचार है। तब श्री देवजी ने सबद सुनाया-

सबद-72

वेद कुराण कुमाया जालूं, भूला जीव कुजीव कु जाणी।
वसंदर नही नख हीरूं, धर्म पुरुष सिरजीवै पुरूं।

भावार्थ- हिन्दुओं का प्रधान ग्रन्थ वेद है तथा मुसलमानों का कुरान है। हिन्दू वेद पर गर्व करते हैं तथा मुसलमान कुरान पर। वेद या कुरान ये बहुत ही बड़े हैं। इनमें अनेक प्रकार की बातें कही गई हैं। बड़े ही परिश्रम से यह एक शब्दों का जाल गूंथा गया है। इस जाल में फंस तो जाते हैं किन्तु निकलना नहीं जानते। तत्कालीन भाषा में ही दुरूह तथा परस्पर विरोधी वार्ता होने से अध्ययन कर्त्ता संशय में पड़ जाते हैं इसलिये वेद मन्त्रों की मीमांसा आदि कई ग्रन्थों में व्याख्या की गई है तथा भूले हुए प्राणी तथा कुजीव, दुष्ट प्रकृति वाले तो अपने ही तरीके से उन मन्त्रों का अर्थ निकाल लेते हैं। उससे यज्ञ जैसे पवित्र कार्य में भी हिंसा का बोलबाला पूर्व में हो गया था। एक ही मन्त्र के अनेक अर्थ हो सकते हैं। इस सुविधा का लाभ कुजीव अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये करते हैं।

अग्नि देवता कभी भी हीरे का नग नहीं हो सकती। अग्नि तो अग्नि ही है तथा हीरा तो हीरा ही है। अग्नि में दाहकत्व-जलाना, प्रकाश देना शक्ति होती है। वह हीरे में नहीं है। फिर भी अपनी जगह पर अग्नि का वह सूक्ष्म रूप हीरा भी अपना विशेष महत्त्व रखता है अर्थात् वेद तो अग्नि सदृश है तथा सबदवाणी हीरे के सदृश है। ये दोनों ही अपने अपने स्थान में महत्त्वपूर्ण है। हीरे के नग से अलंकार बनता है तथा प्रकाश सौन्दर्य भी सर्व ग्राह्य सुलभ है। किन्तु अग्नि रूप वेद में तो हाथ जलने का सदा ही डर बना रहता है। इसलिये अग्नि को देखकर हीरे का त्याग नहीं करना चाहिये। जो धार्मिक पुरुष होगा, वही इन हीरे की परख को जान सकेगा तथा इस सबदवाणी रूपी हीरे को ग्रहण करके जीवन को पूर्ण करके आनन्द को प्राप्त होगा।

कलि का माया जाल फिटा कर प्राणी, गुरु की कलम कुराण पिछाणी।
दीन गुमान करीलो ठाली, ज्यूं कण घातै घुण हांणी।

इसलिए हे प्राणी! कलयुग में माया का जाल बहुत फैल चुका है तथा फैलता ही जा रहा है। इसमें फंसना नहीं। इस माया के नए-नए आविष्कारों को देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना, उसी जाल को ही सत्य मान कर उसमें फंस नहीं जाना। सतगुरु के बताये हुए शब्दज्ञान को ही वेद, कुरान मानकर उन्हें समझकर तदनुसार ही जीवन को बनाना।

वह दिन-रात रूप से व्यतीत होने वाला काल तुम्हारे अहंकार को एक दिन तोड़ देगा। तुझे विद्या, धन, परिवार, मजहब आदि का अहंकार हो चुका है किन्तु ध्यान रखना कि जिस प्रकार से धान मोठ, बाजरी आदि में घुण-कीट विशेष जब अन्दर घुस जाता है तो वह दाने के अन्दर के कण के भाग को खा जाता है। वह दाना थोथा हो जाता है उसी प्रकार से तेरे अन्दर भी मजहब-धर्म रूपी काल बैठा हुआ है। तेरे अहंकार को दिनों दिन काटता जा रहा है। एक दिन पूर्णतः समाप्त कर देगा तो तुझे इह लोक छोड़कर जाना पड़ेगा। इससे तो यही अच्छा है कि तू अपनी इच्छा से ही अभिमान को छोड़कर निरभिमानी हो जा। सरल मार्ग को अपना करके सहज जीवन जीना प्रारम्भ कर उस महाकाल से युद्ध में तूँ जीत नहीं सकेगा। यही अच्छा है कि उससे समझौता कर ले।

साच सिदक शैतान चुकावों, ज्यूं तिस चुकावै पाणी।

मैं नर पूरा सरविण जो हीरा, लेसी जांकै हृदय लोयण, अन्धा रह्या इंवाणी।

जिस प्रकार प्यास को जल मिटा देता है अर्थात् जल के अभाव में तो भयंकर प्यास लगी थी जल के मिल जाने से निवृत्त हो जाती है। उसी प्रकार से ही सत्य निश्चलता से शैतानता को समाप्त किया जा सकता है। सत्य, दया, प्रेम के अभाव में तो शैतानी ने आकर डेरा जमाया था तथा सत्यादि धर्म आ जाने से यह शैतानी प्यास की तरह ही चली जायेगी। गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि मैं तो पूर्ण पुरुष हूँ तथा इन सांसारिक कार्यकलापों के छोटे-बड़े व्यापार को छोड़कर अध्यात्म ज्ञान रूपी हीरों का ही व्यापार करता हूँ। इन हीरे मोतियों के ग्राहक सभी नहीं होते, तभी तो हीरे-जवाहरात की दुकानों पर भीड़ दिखाई नहीं देती अर्थात् वहाँ पर तो कोई वही सुजीव आयेगा जिसके हृदय रूपी नैन खुल गये हैं। इन बाह्य चक्षुओं से तो हीरे की या काच की परीक्षा नहीं होती, इनकी परीक्षा के लिये हृदय के नेत्र अर्थात् प्रेम, श्रद्धा, विश्वास के नेत्र होने चाहिये। वही मेरे पास आयेगा और दिव्य हीरों को ग्रहण करेगा तथा जो अन्धे है अर्थात् इन बाह्य चर्म चक्षुओं से तो देखते है किन्तु हृदय की आंख अब तक नहीं खुली है वे न तो मेरे पास ही आ सकेंगे, ऐसे लोग जीवन धारण करके भी पशु जैसे ही रह गये।

निरख लहो नर निरहारी, जिन चोखंड भीतर खेल पसारी।
जंपो रे जिण जंपै लाभै, रतन काया एह कहाणी।

जिस परमात्मा ने स्वर्ग, पाताल, मृत्यु लोक तथा वैकुण्ठ धाम इनका चारों ही युगों में यह सृष्टि रूपी खेल रचाया है। 'एकोऽहं बहुस्याम प्रजायेय' स्वयं ही एक से बहुत बने हैं तथा यह खेल रचा है तथा जो नर रूप में निरहारी तुम्हारे सामने उपस्थित है इनको ध्यानपूर्वक देखो स्मरण करो तथा पहचान करके अपने जीवन में अपनाओ अर्थात् परमात्मामय जीवन को बनाओ। हृदय में प्रभु को दिव्य नर रूप ज्योति धारण करके शुभ कर्म करो। उस परमात्मा की प्राप्ति के साधन भी अनेक बतलाये हैं। किन्तु सबसे सरल तथा सुगम उपाय तो उनका एकाग्र मन से परमात्मा विष्णु के नाम का जप ही है। उसी से ही प्राप्ति संभव हैं अन्य पशु आदि शरीरों से तो यह मानव काया श्रेष्ठ है। इसलिए इसे रत्न भी कहा जाता है। इस रत्न सदृश उत्तम काया से ही विष्णु जप द्वारा वहाँ तक पहुँचा जा सकता है-

काही मारू काही तारूं, किरिया बिहूणा पर हथ सारूं।
शील दहूं उबारूं ऊन्हें, एकल एह कहाणी।

यहां पर आकर तो मैं किसी को तो मारता हूँ अर्थात् जिनके अजर काम, क्रोधादि बलवान शत्रु है, उन शत्रुओं को मार देता हूँ। तो वह जन भी अहंकार मोह माया रहित मृतवत् ही हो जाता है तथा अन्य पुरुष भी जो सज्जन धार्मिक सात्विक प्रकृति वाले है उन्हें तो मैं पार उतार देता हूँ क्योंकि ऐसे लोग तो तैयार ही थे, उन्हें तो केवल सहारे की ही आवश्यकता थी तथा और जो क्रिया रहित तामसिक प्रकृति वाले जन शुद्ध क्रिया रहित दुष्ट प्रकृति वाले जनों के हाथों में चढ़ चुके हैं। उनको मैं वापिस पंथ में लाया तथा उनकी दुष्टता छुड़ा करके शीलव्रत दिया। उन्हें सुशील बना करके भवसागर में डूबते हुए को उबार लिया। इसलिये कलयुग की तो यही कहानी है। मानवों के दुर्गुणों का संशोधन करके उन्हें शुद्ध सात्विक शील आचरणमय बनाना।

केवल ज्ञानी थलसिर आयो, परगट खेल पसारी।
कोड़ तेतीसों पोह रचावण हारी, ज्यूं छक आयी सारी।

वही पूर्ण ब्रह्म परमात्मा कैवल्य ज्ञानी इस सम्भराथल पर आया है। इससे पूर्व तो अवतारी पुरुषों ने खेल तो रचा था किन्तु वह तो अब अप्रत्यक्ष हो चुका है तथा सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अप्रगट रूप से ही सृष्टि की रचना रूपी खेल, खेल रहे हैं। गुरु जी कहते हैं कि मैंने यह थल पर दिव्य खेल रचा है, यह प्रगट है यानि प्रत्यक्ष है तथा यह खेल भी निरुद्देश्य नहीं है तेतीस करोड़ की संख्या पूर्ण करने के लिये इस मार्ग का निर्माण मैंने किया है क्योंकि इससे पूर्व सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग में इसी मार्ग पर चलकर इक्कीस करोड़ तो पार पहुँच चुके हैं और इस समय अवशिष्ट बारह करोड़ को भी पहुँचाना है।

जिस प्रकार से गऊवें वन में जाती है, वहाँ पर घास चरकर वापिस आते समय तालाब कुएँ का पानी पीकर तृप्त हो जाती है तथा घर में आकर आनन्दपूर्वक बैठ जाती है। उसी प्रकार से इन जीवों को भी संसार में कर्म फल प्राप्ति के लिये भेजे थे। यहाँ पर कुछ दिनों तक रहकर अपने कर्मों को भोग करके वापिस जब अपने घर परमात्मा के पास पहुँचते है तो वहाँ पर आनन्दपूर्वक बैठते हैं, असली तृप्ति का अनुभव उसी समय ही होता है और यदि सदा के लिये वन में ही रहना स्वीकार कर लिया है तो तृप्ति का अनुभव नहीं हो सकेगा, घास आदि मिल ही जायेगा तो पानी नहीं मिलेगा। बिना जल के तो तृप्ति भी नहीं हो सकती अर्थात् अपने सच्चे घर परमात्मा की ज्योति से ज्योति मिलान हुए बिना सुख तो नहीं मिल सकता।

- साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

जीव दया पालणी

इस सृष्टि का सृजनहार एक ही है, जिसने मनुष्य सहित सभी जीव-जन्तुओं को बनाया है। उन द्वारा सृजित कोई भी जीव या वस्तु सृष्टि के लिए अनुपयोगी नहीं हो सकती। इस सृष्टि में रहने का जितना अधिकार मनुष्य का है उतना ही अन्य जीव-जन्तुओं व कीट-पतंगों का भी है। ये जीव-जन्तु व कीट-पतंगे पृथ्वी पर संतुलन बनाए रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। आज वैज्ञानिक भी इस बात को मानते हैं कि यदि पृथ्वी पर जीवन को बचाना है तो जैव विविधता को बचाए रखना होगा। वैज्ञानिक आज खतरे को सामने देखकर जैव विविधता की बात करते हैं परन्तु गुरु जम्भेश्वर जी ने तो पाँच सौ वर्ष पूर्व ही इसकी उपयोगिता व आवश्यकता जान ली थी, तभी उन्होंने अपने धर्म नियमों में 'जीव दया पालणी' का प्रावधान किया था। उन्होंने केवल बड़े ही नहीं अपितु छोटे से छोटे जीव की रक्षा पर बल दिया था। इसलिए दूध, पानी और ईंधन को छानकर व देखभाल कर प्रयोग में लेने का आदेश दिया था।

आज जैव विविधता निश्चित रूप से संकट में है। जीवों की अनेक प्रजातियां लुप्त हो गई हैं तथा होती ही जा रही हैं। पहले के जमाने में जब कच्चे मकान होते थे और लकड़ी पत्तों की छत होती थी तब जीव-जन्तु भी उनमें घर बनाकर निवास करते थे परन्तु अब कंकरीट के आते ही उनके घर उजड़ गये। उन्होंने जंगलों या खाली स्थानों पर अपना आशियाना ढूंढना चाहा तो वहां भी उन्हें निराशा हाथ लगी क्योंकि शहरीकरण और भौतिकवाद के चलते जंगल भी हमने साफ कर दिये। बड़े-बड़े हाइवे भी इन जीव-जन्तुओं के लिए काल साबित हो रहे हैं। मनुष्य का अपने मनोरंजन के लिए इन्हें बंधक बनाना और फिर इनकी आपस में लड़ाई करवाकर इन्हें लहूलुहान कराना भी बड़े शहरों में एक फैशन बनता जा रहा है।

छोटे-छोटे जीव-जन्तु जहां उनके आशियाने उजाड़ने व कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से कालग्रस्त होते जा रहे हैं वहीं बड़े जानवर विशेषकर वन्य प्राणी शिकारियों की भेंट चढ़ते जा रहे हैं। यदि जीव-जन्तुओं का काल कवलन इसी गति से चलता रहा तो धरती को जीव-जन्तुओं से विहीन होते अधिक समय नहीं लगेगा। यह हमें अच्छे से जान लेना चाहिए कि जब पृथ्वी पर जीव-जन्तु नहीं बचेंगे तो मनुष्य भी जीवित नहीं रह पायेगा। मनुष्य को स्वयं अपना अस्तित्व बचाए रखना है तो विशेष प्रयत्न करके इन जीवों को बचाना होगा।

कम से कम मनुष्य को इतना प्रयत्न अवश्य करना चाहिए कि हम जीवों को किसी भी तरह से प्रताड़ित न करें, जिससे वे अपनी जिंदगी अबाधित रूप से व्यतीत कर सके। जंगलों की कटाई न की जाए ताकि जीवों का आशियाना बना रहे। भारतीय परिवेश मे अप्रैल से जून तक का मौसम जीव-जन्तुओं के लिए विशेष संकट काल होता है। दाना-पानी के अभाव में कितने ही जीव दम तोड़ जाते हैं। हमारा विशेष कर्त्तव्य बनता है कि गुरु जम्भेश्वर जी के आदेश 'जीव दया पालणी' का पालन करते हुए घरों की छतों पर या वृक्षों पर परिंडे लगाकर इन जीवों को जीवनदान दें, इसमें हमारा भी कल्याण निहीत है।

हरजी कृत साखी

देव तणी परमोध में, कसवैं समो न कोय।
सेंसो तो सारा सिरै, अरू स्वर्गा में होय।1।
अरज करूं गुरुदेव जी, और न करसी कोय।
म्हां समान कोई मानवी, जग मां देख्यो न लोय।2।
सैंसो तो सतगुरु सूं कहै, मांगे सीख जमात।
घर आया नै दीजिये, सुण सैंसा आ बात।3।
जोखाणी जोखो घणों, सुण ले साची सीख।
घर आया नै दीजिये, भाव भले सूं भीख।4।
बार बार म्हांसो कही, एक बात सौ बार।
मेरे घर को जगत् गुरु, जाणें सब संसार।5।
आंजस कर सैंसे कही, दइय न आई दाय।
सतगुरु आप पधारिया, पत्री लई उठाय।6।
अवाज करी हरि आंवता, हाजर है सो लाव।
सतगुरु उभा आंगणें, देखण आया भाव।7।
नारी सारी आंगणें, बैठी जोड़या थाट।
भीख न घातै भाव सूं, ऊभा जोवे बाट।8।
लैणायत ज्यूं क्यूं खड्यो, समझायो सौ बार।
कह्यो न मानें श्यामियो, हैं तो बड़ो गिंवार।9।
जर झाली ठमको दियो, नारी कियो जोर।
भनाय चल्या घर आपणें, पत्री केरी कोर।10।
परभाते सैंसो आवियो, देव तणौ दीवाण।
सुण सैंसा सतगुरु कह, ऐ सहनाण पिछाण।11।
एह पटंतरा सांभलो, सैंसो गयो सरमाय।
आंख भींच भूं में पड़यो, धरती में रहूं समाय।12।
मूंधे मूंडै पड़ रहयो, सांभल सकै न जोय।
इण खूंदी खूंद किया घणां, अरज करो मत कोय।13।
साथरिया कह श्याम सूं, अरज सुणो सुरराय।
जे थे छोड़ो हाथ सूं, जड़ा मूल सूं जाय।14।
उठ सैंसा सतगुरु कहै, गर्व न करो लिंगार।
जन हरजी ऐसे कहै, सांच बड़ो संसार।15।

भावार्थ-एक बार गुरु जम्भेश्वरजी ने अपनी शिष्य मण्डली सहित भ्रमणार्थ प्रस्थान किया था। एक रात्रि जांगलू की साथरी में निवास करते हुए दूसरी रात्रि नाथुसर के पास झींझाले धोरे पर निवास किया था। वहीं प्रात:काल नाथुसर का सैंसा भक्त जो कस्वां गोत्र का था, वह भी अपने मित्र सम्बन्धियों सहित दर्शनार्थ झींझाले आया था। आगे साखी में बतलाया है-

देव जाम्भोजी के दरबार में सैंसोजी आये थे। उनके जैसा अन्य भक्त और नहीं था। सैंसो तो शिरोमणि भक्त था। सैंसे की जाम्भोजी ने स्वयं भूरि- भूरि प्रशंसा भी की थी। यह भी कहा था कि यह भक्त निश्चित ही स्वर्ग का अधिकारी है।1। गुरु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर सैंसे ने भी यही कहा कि हे देव! मैं आपसे विनती कर रहा हूं, ऐसी विनती प्रार्थना जप अन्य कोई नहीं कर सकता। वास्तव में मेरे जैसा मानव और कोई नहीं होगा।2। सत्संग पूर्ण हुआ संध्या बेला हो गई सभी ने अपने अपने घरों को जाने की आज्ञा मांगी तथा सैंसे ने भी हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा कि हे देव! मुझे क्या आज्ञा है? गुरुदेव ने कहा कि घर आये हुए सुभ्यागत का आदर सत्कार करना यही तुम्हारे लिये आज्ञा है।3। हे जोखाणी! इसी बात की तुम्हारे घर पर कमी है। इसकी पूर्ति करना ही सच्ची शिक्षा है।4। सैंसे ने कहा-हे देव! एक ही बात यह आप मुझे बार-बार क्यों कहते हो। मेरे घर को तो सम्पूर्ण संसार जानता है। मैं घर आये हुए सुभ्यागत का सत्कार तन-मन धन से करता हूं।5। यह बात सैंसे ने बड़े ही अहंकार से कही थी। देवजी को अच्छी नहीं लगी थी। ऐसी गर्व पूर्ण वार्ता कहकर सैंसा तो अपने घर चला गया। पीछे-पीछे श्रीदेवजी ने अपनी पत्री उठा ली और वेश बदल लिया और सहसा सैंसे के घर पर पहुंच गये।6। घर में पहुंचते ही हरि ने भिक्षा के लिये उच्च स्वर से आवाज लगाई और कहा कि जो भी भोजन है वह लाकर देवें। ऐसा कहते हुए दरवाजे पर खड़े हो गये। सैंसा का भाव देख रहे थे, अभी-अभी अपनी बड़ाई करके आया है, इसके अहंकार का खंडन करना चाहिये।7। घर की सभी छोटी-बड़ी महिलाएँ बैठी बातें कर रही थी। कोई भिक्षुक आया है, इस बात की उन्हें कुछ भी परवाह नहीं है। इसलिये भिक्षा नहीं दे रही है। देवजी खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे है।8। एक प्रधान नारी ने यह कहते हुए नाराजगी प्रगट की कि ऐसे खड़ा हुआ क्या देख रहा है मानों कर्जदार कर्जा मांगने आया है। इसे कितनी बार समझाया है किन्तु यह मानता ही नहीं है। सैकड़ों बार इसे यहां से जानें के लिये कहा किन्तु यह बड़ा ही हठीला है मानता ही नहीं है न जानें यह कैसा स्वामी फकीर है। यह तो निपट मूर्ख गंवार मालूम पड़ता है।9। अन्त में जब वहां से नहीं हटे तब हार करके कड़सी-जरिये में बची खुची ठंडी बासी खिचड़ी लेकर आयी और उन्हें देने लगी किन्तु वह तो कड़सी के चिपट गई थी, छूट नहीं रही थी। उसे छुटाने के लिये जोर से पत्री पर चोट मारी तब पत्री एक तरफ से खण्डित हो गई। इस प्रकार से खण्डित पत्री और बासी भोजन लेकर चल पड़े।10। चलते हुए यह सवाल भी किया कि रात्रि में सर्दी अधिक है इसलिये ओढ़ने के लिये वस्त्र भी दीजिये इस सवाल को सुनकर एक फटा पुराना गूदड़ा पकड़ा दिया और वहां से रवाना कर दिया। दूसरे दिन प्रात:काल ही सैंसा अपनी मण्डली सहित वहां झींझाले पर पहुंच गया और वहीं पर दान की वार्ता चली तब सैंसे ने बड़े ही गर्व के साथ कहा कि मैं दान देता हूं। मेरे घर को सारा संसार जानता है। तब गुरुदेव ने सैंसे के घर पर टूटा हुआ पात्र एवं भिक्षा का अन्न दिखाया और कहा कि यही तेरे घर की भिक्षा एवं फटा मैला वस्त्र है। इसकी पहचान कर ले।11। ये दोनों वस्तुएं अपने ही घर की देखकर सैंसा शर्मिंदा हो गया। आंखें बन्द कर ली और भूमि पर उल्टे मुंह गिर पड़ा। विलाप करते हुए कहने लगा-इस समय यदि धरती फट जाती तो अन्दर समा जाता।12। सैंसा मूंधे मुंह पड़ा रहा सामने भी नहीं देख सका। कहने लगा-यह सैंसा हत्यारा है, ऐसी हत्याएं न जानें मैंने कितनी की हैं। हे लोगों! श्री देव जी से मुझे क्षमा करने के लिये प्रार्थना न करो। मैं प्रार्थना करने के तथा क्षमा करने के योग्य भी नहीं हूं।13। फिर भी साथियों ने श्री देव से प्रार्थना करते हुए कहा कि हमारी अर्ज सुनो। यदि आपने इस समय सैंसे को नहीं सम्भाला तो यह जड़ मूल से ही समाप्त हो जायेगा। इसलिये इस दीन पर कृपा करो।14। तब गुरुदेव ने कहा सैंसा! खड़े हो जाओ। किन्तु फिर कभी इस प्रकार का अहंकार नहीं करना। हरजी कहते हैं कि संसार में सत्य ही बड़ा है। इस प्रकार से सैंसे के अहंकार को मिटाया था। वह खण्डित भिक्षा पात्र अब भी जांगलू के मन्दिर में रखा हुआ है। इस समय भी गुरुदेव को भिक्षा के रूप में उस पात्र को घी से भरते हैं।15।

साभार-

साखी भावार्थ प्रकाश

संस्कार और संस्कृति

संस्कार और संस्कृति- इन दोनों सामाजिक उपादानों का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। दोनों ही मानव के शरीर, आत्मा और व्यवहार के परिशोधन या परिमार्जन के आन्तरिक और बाह्य पक्षों से सम्बद्ध हैं। भारतीय संस्कृति सदा से ही संस्कार और सदाचार से अनुप्राणित रही है। संस्कार एक ओर जहाँ शरीर और आत्मा को सुंसस्कृत कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्राप्ति में सहायक बनते हैं, वहाँ दूसरी ओर वे योग्य और चरित्रवान् संतानों के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। संस्कृति जब भी जीवन के शोधन या परिमार्जन की क्रिया से जुड़ती है, तब उसके मूल में शास्त्रोक्त संस्कारों की सम्पन्ता ही होती है। इस प्रकार संस्कार और संस्कृति दोनों का लक्ष्य मानव के तन-मन और आचार-विचार का शोधन है और इसी बिन्दु पर दोनों एक साथ दिखायी देते हैं।

'संस्कार' और 'संस्कृति' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ भी इन दोनों उपादानों के पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध और समान लक्ष्य को प्रमाणित करता है। 'संस्कार' शब्द संस्कृत भाषा की 'कृ' धातु से निष्पन्न है। 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'घञ' प्रत्यय के योग से 'संस्कार' शब्द बनता है। 'कृ' धातु का अर्थ है 'करना'। और 'सम' उपसर्ग का अर्थ 'सम्यक् रूप से' या 'भली भाँति' है। इस प्रकार निष्पन्न संस्कार शब्द का अर्थ पूरा करना, सुधारना, सज्जित करना, माँजकर चमकाना, शृंगार सजावट आदि है। इसी से सम्बद्ध शब्द 'संस्कृति' है। संस्कृति शब्द सम् उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से भूषण भूत अर्थ में 'सुट' का आगम करके 'क्तिन' प्रत्यय करने से निर्मित होता है, जिसका अर्थ भूपग भूत सम्यक कृति है। इसीलिये 'भूषण भूत' सम्यक् कृति या चेष्टा ही संस्कृति कही जा सकती है। यह संशोधित या परिमार्जित करने की सूचक संज्ञा है। उपर्युक्त व्युत्पतिलभ्य अर्थ संस्कार, संस्कृत और संस्कृति के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट से संसूचित करता है। संस्कार संस्कृति की केन्द्रीय चेतना है। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म में संस्कारों का विशिष्ट महत्व है। संस्कार सम्पन्न व्यक्ति ही सुंसस्कृत सभ्य, शिष्ट, सदाचारी और चारित्रिक दृष्टि से उत्तम माना जाता है। जबकि संस्कार विहीन व्यक्ति अधोगति को प्राप्त करता है। ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय की सिद्धि के लिये मानव का संस्कार-सम्पन्न होना अपरिहार्य है-

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निशेकादिर्द्विजन्मानाम।
कार्यः शरीरसंकारः पावनः प्रेत्य चेह च॥ (मनुस्मृति)

मनु ने संस्कारों को सम्पादित करने का निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा है कि संस्कार इस जन्म और परजन्म में पवित्र करने वाला है -'पावन' प्रेत्य चेह च'। यही नहीं संस्कार सम्पन्नता से बुरे संस्कारों का शमन और श्रेष्ठ संस्कारों का जन्म होता है।

सामान्यतः संस्कार शब्द का अर्थ शरीर सम्बन्धी और आत्मा से सम्बद्ध दोषों के आहरण से है। शारीरिक और मानसिक मलों के अपाकरण के बिना आध्यात्मिक पूर्णता की योग्यता प्राप्त नहीं हो सकती, जो संस्कारों का कार्य और संस्कृति का चरम ध्येय है, क्योंकि संस्कृति का सम्बन्ध भी किसी न किसी रूप में मानव व्यवहार के परिशोधन या परिमार्जन के आन्तरिक और बाह्य पक्षों से अवश्य जुड़ता रहा है।

संस्कृति की अवधारणा और संस्कार- जिन शाब्दिक उपादानों से संयुक्त होकर 'संस्कृति' शब्द का निर्माण हुआ है, उसे देखते हुए लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अभ्युदय के उपयुक्त देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकार आदि की भूषणभूत सम्यक् चेष्टाएँ एवं हलचलें संस्कृति कही जाएंगी। ये भूषण भूत सम्यक् चेष्टाएँ संस्कारित मन की चेष्टाएँ है, क्योंकि संस्कारों से ही व्यक्ति को शास्त्रीय आचार-विचार और व्यवहार की प्रबल प्रेरणा मिलती है और वह अध्यात्म मार्ग का अनुगामी बनकर भगवद् भक्ति परायण होती है। संस्कारों से शुचिता, पवित्रता, सदाशयता, उदात्ता तथा सात्विक गुणों की सहज प्रतिष्ठा होती है। इससे मानव जीवन अत्यन्त मर्यादित,

संयमित और आचारनिष्ठ बनता है। अत: संस्कृति के स्वरूप निर्माण में संस्कारों की भूमिका निर्विवाद है। संस्कारों की सुविहित शास्त्रीय विधान द्वारा निर्मल किये गए तन और मन के द्वारा ही जीवन- शोधन की क्रिया सम्भव है, जो संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। यहाँ यह स्मरणीय है कि 'संस्कार' और संस्कृत शब्द तो संस्कृत साहित्य में बहुप्रयुक्त हैं, पर संस्कृति शब्द का प्रयोग वहाँ अपेक्षाकृत कम हुआ है। आज जिस अर्थ में कल्चर' के पर्याय के रूप में संस्कृति में व्यवहृत नहीं मिलता। संस्कृति शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थवाला है, कल्चर से वह भाव व्यक्त नहीं होता। कल्चर शब्द लैटिन भाषा के 'कुलतुरा' शब्द से उद्धृत है, जिसका अर्थ है पौधा लगाना या पशुओं का पालन करना। कल्चर शब्द कल्टीवेशन का समानार्थक है। कल्टीवेशन का अर्थ कृषि-कर्म के साथ उन्नति और संवर्धन है।

संस्कृति को मानव प्रज्ञा की आन्तरिक चेतना का अमृतमय विकास मानते हुए जब इसका सम्बन्ध आदर्श, आस्था, मानवता, विश्वबन्धुत्व और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व- जैसे महत् मूल्यों से जुड़ता है तब उसके मूल में संस्कारों की सत्प्रेरणा सन्निहित रहती है क्योंकि संस्कार, सदाचार, सद्विचार और शास्त्रीय आचार के घटक हैं। संस्कार ही सद्विचार और सदाचरण के नियन्ता है। संस्कृति ने यदि मानव को पशुधर्म से ऊपर उठाया है और इतना साधन सम्पन्न बनाया है कि स्वर्ग के देवता भी ईर्ष्या करने लगे तो संस्कारों ने उसे वह शक्ति दी है जिससे वह अपने कर्तव्य और कर्म को विधिपूर्वक करने में समर्थ हो सके। संस्कारों से सत्प्रेरणा पाकर ही संस्कृति मानव में विद्यमान उसके अन्त: सौन्दर्य को दीप्त करने वाली, प्रक्रिया कहलाती हैं, जिसके आश्रय से मानव को अपने जीवन के उच्चतम ध्येय एवं पवित्र संकल्पों को प्राप्त करने का दिग्बोध होता है। संस्कार तन-मन के मलों को दूर करते है, तो संस्कृति अवगुणों का परिमार्जन करती है। वस्तुत: संस्कृति सामाजिक जीवन का वह व्यापक धर्म है, जिसमें समाज की समग्र साधना, आकांक्षा एवं उपलब्धि आ जाती है।

संस्कृति आन्तरिक तत्व होते हुए भी धर्म, दर्शन, कला , चिन्तन, अध्यात्म, समाज, नीति आदि के रूप में अपने-आपको अभिव्यक्त करती हैं। संस्कृति का सीधा सम्बन्ध संस्कार से है। संस्कार वस्तु को चमकाते और श्रेष्ठ बनाते हैं, उसके भीतर की गरिमा को उद्घाटित करते हैं तो संस्कृति जातीय संस्कारों को उत्तम बनाने, परिष्कार करने एवं संशोधित करने की क्रिया है।

संस्कृति मानवीय कृति है। मानव गतिशील प्राणी है, इसीलिए संस्कृति भी निरन्तर गतिशील है। जो आज की अनुभूति है वह कल संस्कार के रूप में अवशिष्ट रह जायेगी और कल की अनुभूति सम्भवत: दूसरे प्रकार की होगी, इसीलिए दृष्टिकोण भी बदल जाएगा, संस्कृति मनुष्य के दैनिक व्यवहार में, कला में, साहित्य में, धर्म में, मनोरंजन और आनन्द में पाये जाने वाले रहन-सहन और विचार के तरीकों में मानव प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति है। मनुष्य के लौकिक, पारलौकिक, सर्वोभ्युदय के अनुकूल ऐसे आचार-विचार को संस्कृति कहा जा सकता है जो संस्कार -सम्पन्नता द्वारा परिशुद्ध कर लिया गया हो।

संस्कार और संस्कृति के आयाम- जो कार्य शास्त्रविहित विधि से सम्पन्न संस्कारों द्वारा होता है, वही कार्य संस्कृति की पहचान बनता है अर्थात् संस्कृति मानव के भाव, कर्म, व्रत, प्रकृति, मन, चित्त बुद्धि और आत्मा- सभी का संस्कार करती है। संस्कार और संस्कृति समूची जीवनचर्या और बुद्धि सम्पदा को प्रभावित करती है।

संस्कृति का गहरा सम्बन्ध धर्म, दर्शन और नैतिकता के साथ भी है। अत: संस्कारों का भी सीधा सम्बन्ध धर्म और नैतिकता के साथ जुड़ता है। अपने व्यापक अर्थ में धर्म मानव के समूचे शुभाचरण को समेट लेता है। वह समस्त मानवता का ज्योतिर्मय आचार-कलश है। वह श्रद्धासिक्त मानव की आचारनिष्ठा है। वह जीवन्त आस्था का पुष्ट कर्म रूप है।

संस्कृति मानव का समग्र संस्कार करती है। मानव की सभी वृत्तियों का परिष्कार, परिमार्जन संस्कृति के माध्यम से होता है। अत: संस्कारों (गर्भाधान, जातकर्मादि) की सम्पन्नता को शरीर और आत्मा की परिशुद्धता से जोड़ते हुए शास्त्रज्ञों ने संस्कारों के करने के व्यापक नियमों का निर्देश किया

है। इतना ही नहीं, संस्कार सम्पन्न मानव दया, सत्य, प्रेम, उदारता, त्याग और बन्धुत्व- जैसे महनीय गुणों से संयुक्त होता है। संस्कार मानव- स्वभाव पर शासन करता है। मानव हृदय को मृदुल एवं पावन बनाने की क्षमता संस्कारों में ही है। इसी से उदार और विशाल बनता है। इसी दृष्टि से संस्कार, संस्कृति और धर्म में गहरा सम्बन्ध है।

नैतिकता का आधार नीति है, जो करणीय-अकरणीय का भेद बताकर करणीय का निश्चय कराती है। जीवन के विविध क्षेत्रों में संस्कारित मानव ने जो अनुभव अर्जित किये हैं। उन्हीं के आलोक में युग-युग में मनीषी आचार्यों ने नीति का निर्धारण किया है और बताया है कि व्यक्ति और समाज के कल्याण के लिए क्या करने योग्य है और क्या न करने योग्य। इसी नीति से जो कर्त्तव्य भाव जाति में विकसित होता है, वही नैतिकता है। व्यापक रूप से समाज की स्थिति एवं रक्षा के लिए किया जाने वाला प्रथम विशेष शील नैतिकता है। यह शील संस्कार का ही एक घटक है। अत: संस्कार और संस्कृति विविध आयामों के साथ नैतिकता का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

वर्तमान परिदृश्य में संस्कार और संस्कृति यह निर्विवाद है कि उत्तम संस्कार से श्रेष्ठ संस्कृति का स्वरूप बनता है। इसलिए भारतीय धर्मशास्त्रों में संस्कार सम्पन्न व्यक्ति के अभ्युदय और संस्कारविहीन व्यक्ति के पतन की बात बार-बार कही गयी है। संस्कारों से शुचिता, पवित्रता, सदृश्यता तथा सात्विक गुणों की सहज प्रतिष्ठा होती है। पर आधुनिक सभ्यता के दबाव में मानव संस्कारहीन होकर तीव्र गति से पतनोन्मुख हो रहा है।

आज भौतिक सुख, धन, पद, प्रतिष्ठा महत्वपूर्ण और परम्परागत शास्त्रीय मूल्य अर्थहीन हो गये है। ऐसे समय में जब तथाकथित भौतिक विचारधारा से प्रभावित तथा मानसिक रूप से अपरिपक्व लोग जीवन के शास्वत मूल्यों से विमुख होकर एक ऐसी संस्कारहीन संस्कृति का पोषण कर रहे हैं तो सच्ची उन्नति के लिए शास्त्रालोक, संस्कारों की विधि सभ्यता को स्वीकार करना ही होगा, तभी संस्कृति का उदात स्वरूप बना रह सकता हैं।

-डॉ. राजा राम

राजकीय महाविद्यालय, भट्टू कलां (फतेहाबाद)

बिश्नोई सभा, हिसार ने शुरू की कैरियर गाइडेंस एवं मेट्रीमोनियल सेवा

बिश्नोई सभा, हिसार ने समय की मांग और समाज की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कैरियर गाइडेंस व प्लेसमेंट और मैट्रीमोनियल सेवा शुरू की है। कैरियर गाइडेंस सेवा के अंतर्गत समय-समय पर युवाओं के मार्गदर्शन हेतु कैरियर गाइडेंस सेमीनार एवं काउंसलिंग आयोजित की जाएगी, जिसमें कुशल विशेषज्ञों द्वारा युवाओं का मार्गदर्शन किया जाएगा। साथ ही बेरोजगार युवाओं का बायोडाटा एकत्रित कर समाज के उद्यमियों व अन्य कंपनियों को भेजा जाएगा, ताकि उनको वहां रोजगार के लिए चयनित करवाया जा सके। सभा द्वारा विभिन्न कम्पनियों को आमन्त्रित कर रोजगार मेले का भी आयोजित किया जाएगा। इस सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक युवाओं से अनुरोध है कि वे सभा द्वारा निर्धारित प्रपत्र को भरकर सभा कार्यालय में जमा करवाएं या pcbshisar@gmail.com ईमेल पर भेजें। सम्पर्क सूत्र: 8607900029, 9416594007, 9812108255

वैवाहिकी (Matrimonials)- समाज में विवाह योग्य युवा-युवतियों के अभिभावकों के मार्गदर्शन एवं सहायता हेतु सभा द्वारा वैवाहिकी सेवा प्रारम्भ की गई। इस सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि सभा द्वारा निर्धारित प्रपत्र भरकर कार्यालय में जमा करवाएं या bmbhisar@gmail.com ईमेल पर भेजें। सम्पर्क सूत्र: 9355667781, 9813067666, 8607900029, 9416995529

नोट: दोनों ही प्रपत्र व विस्तृत नियमावली बिश्नोई सभा, हिसार के कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं तथा सभा की वेबसाइट www.bishnoisabhahisar.com से भी डाउनलोड किए जा सकते हैं।

-प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार

दूरभाष: 01662-225804

संस्मरण

गुरु जाम्भोजी के अनुयायी हरदा के बिश्नोई

मध्यप्रदेश का जिला हरदा आकार में अपेक्षाकृत छोटा है, किन्तु वैशिष्ट्य में उतना ही बड़ा। वन संपदा, जल संपदा, उर्वर-भू संपदा और खाद्यान्न उत्पादन में यह क्षेत्र भारत भर में अपने वैशिष्ट्य के लिए पहचाना जाता है। इस वैशिष्ट्य के साथ यहाँ का सांस्कृतिक और सामाजिक वैविध्य भी अपने आप में अनूठा है।

जनजातियों के साथ यहाँ का लोक समाज अपनी वांछित धरोहरों और सांस्कृतिक परम्पराओं की अक्षुण्णता के लिए भी जाना जाता है। समाज में अपनी बहुत कम तादाद के बाद भी, सबसे विशिष्ट पहचान यदि कोई जाति रखती है, तो वह नि:सन्देह बिश्नोई जाति है। अपनी अलग वाणी, अपने अलग परिधान, अपनी अलग देहयष्टि और अपने अलग ही तेवर और मानसिक गठन तथा आत्मविश्वास से लबरेज व्यक्तित्व के साथ यह जाति अलग से पहचानी जाती है। युवा से युवा आदमी छोड़िये, बच्चे और महिलाएं भी इसकी मिशाल हैं और यह मिशाल आज से नहीं एक सदी पहले से कायम है।

वैश्विक परिवर्तन जब सबके सामने एक चुनौती के रूप में आ खड़े हुए हैं, तब यह जाति तुलनात्मक रूप से कम संकटग्रस्त है। लगता है अपनी परम्परा के साथ कम समझौता करने की प्रकृति ने ही इन्हें यह शक्ति भी प्रदान की हैं। इसी आत्मविश्वास और तेवर को बहुत पहले ''एक भारतीय आत्मा'' के नाम से विख्यात राष्ट्रकवि पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने पहचान लिया था। उन्होंने बिश्नोई जाति के सम्बन्ध में विगत कल परसों नहीं, साल दस साल नहीं, लगभग सौ वर्ष पूर्व की घटना को अपने एक संस्मरण में रेखांकित किया है। सन् 1904 में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी अपने शिक्षक पिता के साथ हरदा के पास स्थित मसन गाँव में रहते थे। एक बार डिप्टी इंस्पेक्टर साहब स्कूलों का निरीक्षण करने पधारे। उन्होंने मसनगाँव के स्कूल का निरीक्षण करने के बाद सोनतलाई की ओर प्रस्थान किया। डिप्टी इन्सपेक्टर साहब ने माखनलालजी के पिताजी को भी साथ चलने का आग्रह किया, किन्तु वे तो तैयार नहीं हुए। पर माखनलालजी पुनघाट में नर्मदा स्नान के लोभ में उनके साथ चल दिये। गाड़ी के बैल बहुत धीरे चल रहे थे। ग्राम खमलाय से जब गाड़ी गुजर रही थी तो धर्म और साहित्य की चर्चा में रत डिप्टी इंस्पेक्टर साहब ने गाड़ी गेरने वाले बिहारी से कहा कि सामने से आ रहे बैलों में से एक बैल जोत लो। अंग्रेजी शासन का यह वह समय था, जब सरकारी अधिकारियों की इस तरह की जबरदस्ती खूब चलती थी। बिहारी ने धीरे चलने वाले बैल को छोड़ा और दूसरा बैल पकड़कर अपनी गाड़ी में जोत लिया। बैलों की मालकिन बिश्नोई जाति की एक महिला थी। उसने जब यह दृश्य देखा तो वहीं से ललकार कर कहा खबरदार! यदि मेरे बैलों को हाथ भी लगाया तो। माखनलालजी ने धीरे से उस महिला को समझाया कि ''ये इंस्पेक्टर साहब' हैं। किन्तु कुछ सुनना तो दूर उस महिला ने बिफर कर कहा, होगा कोई इंस्पेक्टर। बैल नहीं छोड़ेगा, तो इस दराते से उसकी गर्दन ही उतार दूँगी। गाड़ीवाले बिहारी ने उपहास करते हुए कहा- जा जा ऐसी बहुत देखी है। जा जाकर साहब से बात करने के लिए तेरे मर्द को भेज दे। यह सुनकर तो वह साक्षात् रणचंडी बन गई। उसने अपने सिर पर रखा गट्ठर बिहारी के सिर पर दे मारा। गट्ठर इतनी जोर से मारा, बिहारी गाड़ी के नीचे गिर पड़ा और साहब दूसरी तरफ भागते जाते और अपना फेंटा संभालते हुए बिहारी को कहने लगे, उसका बैल छोड़ दे बिहारी। इधर बिहारी उस महिला के पैरों में गिर पड़ा और कहने लागा मुझे अपना बैल तो ले जाने दो। अब गाड़ी धीरे धीरे सोनतलाई की ओर चली। रस्तेभर मौन बना रहा। सोनतलाई पहुंचकर बिहारी बालक माखनलालजी से तुरंत बोले, मुझे पुनघाट स्नान के लिए जाना है, इस बात कि तुम साहब से अनुमति दिलवा दो। अनुमति मिल गई और परीक्षा की समाप्ति के बाद साहब और बिहारी दूसरी बैलगाड़ी से किसी दूसरे गाँव की ओर प्रस्थान कर गये। वह बैलगाड़ी जो मसनगांव से बेगार में चली थी, उसको लेकर माखनलालजी को अकेले

लौटना था। इसी समय इस गाड़ी के मालिक भगवान् पटेल भी आ गये। गाड़ी वापिस मसनगांव के लिए चल पड़ी। माखनलालजी जानबूझकर खमलाय पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उन्हें मालूम पड़ा कि जिस महिला ने इंस्पेक्टर साहब से मुकाबला किया था, उस परिवार के मुख्या का नाम रामाजी बिश्नोई था। माखनलालजी उस परिवार में पहुँचे और अपना परिचय दिया। जब रामाजी को पता चला कि माखनलाल मसनगांव वाले गुरुजी के पुत्र है। तो उन्होंने भगवान् पटेल की गाड़ी को रवाना कर दिया और स्वयं अपनी गाड़ी सजाई और माखनलालजी को मसनगांव ले गये। चलने के पहले माखनलालजी को खूब औटा हुआ दूध लोटे में भरकर दिया। माखनलालजी के आग्रह पर ही, उसे गिलास में दिया गया। माखनलालजी ने इस बिश्नोई बहुल खमलाय गांव के विषय में यहाँ यह भी उल्लेख किया कि ये बिश्नोई लोग अपने विवाहादि प्रसंगों में लापसी में इतना घी डालते हैं कि वह पत्तल में से नीचे तक बहने लगता है। ये लोग प्राण छोड़कर गाड़ी बैल दौड़ाते हैं। गर्मी के दिनों में ये अपने ऊँचे पूरे बैलों को घी पिलाते हैं। माखनलाल जी ने इसी समय रामाजी की पत्नी से प्रश्न किया कि साहब बहादुर की गाड़ी रोकने पर तुम्हें भय नहीं लगा। तो वह बोली कि डर किस बात का? यदि तुम्हारे काकाजी भी अर्थात् रामाजी भी ऐसे हाथ लगाते तो मैं ''ईका भी हाथ काट नाखूं''। रामाजी माखनलालजी के साथ मसन गांव पहुँचे। और पूरी घटना सुनाते हुए बोले यदि साहब मुझे ही बुला लेते तो यह नौबत नहीं आती। माखनलालजी के पिताजी ने रोष व्यक्त करने के स्थान पर कहा नहीं, लड़की ने ठीक किया। वह बहुत बहादुर है।

इस पूरे वृत्तांत से बिश्नोई जाति के एक सदी पूर्व के चरित्र, प्रकृति और स्वभावगत आचरण और संस्कृति के संबंध में कुछ बातें साफ होती हैं। यहाँ यह भी साफ हो जाता है कि उनके ये अभिलक्षण अब तक भी कामोवश यथावत हैं। मसलन, खान पान की वृत्ति, भरपूर घी दूध का सेवन। हृष्ट-पुष्ट बैल घोड़े रखना। उनकी प्राण से देखभाल और रक्षा करना। बैलगाड़ी दौड़ाने का शौक। प्रेम से आवभगत करना। निर्भीक स्वभाव और निरंकुश सत्ता के सामने बेखौफ खड़े हो जाना।

सुप्रसिद्ध कथाकार उदयप्रकाश ने हाल ही में प्रकाशित अपनी कहानी 'जज साहब' में एक जगह लिखा है कि- ''अपने साठ साल के जीवन में मै इतना पीने खाने वाला समय पहले कभी नहीं देखा'' दरअसल हमारे समाज में जिस तरह की भोगवादिता के साथ खानपान बदला है। वह एक खौफनाक मंजर खड़ा कर रहा है। इस चिंता को बिश्नोई समाज में हम देखें तो खान पान की शुद्धता और शुचिता के विषय में तो कम से कम इस समाज ने आज तक कोई समझौता नहीं किया है। भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए शायद यह चौंकाने वाली बात हो, किन्तु आज से कुछ वर्ष पूर्व तक बिश्नोई जाति में ब्राह्मणों के हाथ का भोजन भी वर्जित था। भोजन की यह शुचिता ही शायद वह कारण है कि बिश्नोई जाति का शरीर सौष्ठव अनूठा है। क्या तो पुरुष, क्या स्त्री, क्या वयोवृद्धजन सब तुलनात्मक रूप से बहुत स्वस्थ होते हैं। कम से कम नीमगांव में ही पाँच सात शताधिक आयु के लोग अभी विद्यमान हैं। देश में कुपोषण और स्वास्थ्य की चिंता में दुबले हुए जा रहे विज्ञजनों को बारीकी से इस समुदाय के सुस्वास्थ्य का भी अध्ययन करना चाहिए और यह भी जानना चाहिए कि वे कौनसे सांस्कृतिक और सामुदायिक गुण हैं, जो इनके स्वास्थ्य का आधार हैं। इस बात को एक मुहावरे से भी जाना जा सकता है बिश्नोई लोगों में मान्यता है कि 'भोजन हाथ का या जात का' ही होना चाहिए।

बिश्नोई इस क्षेत्र में कैसे आये? इस जिज्ञासा का समाधान कई गाँवों के बुजुर्गो के कथनों से होता है। उनके अनुसार बिश्नोई लोग अपने हृष्ट पुष्ट बैलों को गाड़ी में जोतकर दूर दूर तक भाड़ा फेंककर आते थे। आज से सौ सवा सौ साल पहले तक न तो पक्की सड़कें थीं और न डीजल वाहन। रस्ते में लूट पाट के खतरे थे, सो अलग। ऐसी विषम परिस्थितियों में जब बिश्नोई का कारवाँ इंदौर की होलकर रियासत से सिंधियाओं के हरदा क्षेत्र में भाड़ा लेकर आने-जाने लगा और उनका इस भू-भाग से परिचय बढ़ा, तो वे धीरे-धीरे आजीविका की संभावना यहीं तलाशने लगे

और यहीं बसते चलते गये। दूसरा कारण राजस्थान में बार बार अकाल पड़ रहा था। जीवन वहाँ कठिन होता जा रहा था। ऐसे में हरदा क्षेत्र की उर्वरता, वन और जल संपदा इस पर्यावरण प्रेमी जाति को खूब भायी। हरदा क्षेत्र में प्रमुख रूप से लगभग पच्चीस तीस गाँवों में बिश्नोई बसावट है।

बिश्नोई इस क्षेत्र में कब से रह रहे हैं इस विषय में कुछ तथ्यों को जान लेना बेहतर होगा। मसलन माखनलाल चतुर्वेदी ने 1904 की घटना का उल्लेख किया है। रसेल और रायबहादुर हीरालाल ने सन् 1916 में प्रकाशित अपनी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में बिश्नोई समुदाय के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला है। सन् 1911 तक तत्कालीन सेंट्रल प्रॉविन्स में बिश्नोई समुदाय की कुछ आबादी हरसूद, सिवानी, मालवा, नरसिंहपुर और जबलपुर और नागपुर क्षेत्र में रहती थी। इस प्रकार, तब की हरदा तहसील में बिश्नोई जनसंख्या एक हजार से कम ही रही होगी। इतनी कम जनसंख्या और राजस्थान से विस्थापन के कुछेक वर्ष बाद ही यहाँ के लोगों ने अपने मंदिर निर्माण (सन् 1914) की न केवल नींव रखी, बल्कि बिश्नोई समाज का चतुर्थ अधिवेशन (1925) भी करवा डाला। चेतना और जीवटता का यह बड़ा उदाहरण है। बिश्नोई समुदाय के अखिल भारतीय अधिवेशनों की शुरूआत को अभी बहुत अधिक समय भी नहीं हुआ था। इसके पूर्व प्रथम अधिवेशन नगीना, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में 26 से 28 मार्च सन् 1921 में, दूसरा मेरठ के पास फलावदा कस्बे में तथा तीसरा सन् 1924 में कानपुर में हुआ था। मुझे लगता है हरदा में बहुत कम संख्या और अपनी बसावट को बहुत ज्यादा समय न होने के बावजूद लोगों में एक बेचैनी रही होगी, अपनी जड़ों से विलग होने की और यही कारण है कि उन्होंने चतुर्थ अधिवेशन हरदा में करवाने की पहल दिखाई।

हरदा जिले में यूँ तो बिश्नोई दस बीस गाँवों में रहते हैं, किन्तु नीमगांव, बड़ा अबगाँव, खमलाय, टेमलावाड़ी, जामली, काड़ौला, डोमनमऊ, सोनतलाई, छिदगांव, उंडावा, नगावा आदि प्रमुख गाँव हैं। इनमें नीमगाँव सर्वप्रमुख है। नीमगाँव हरदा जिले का ऐतिहासिक गाँव है। यह गाँव किसी समय वीराना मौजा था। गाँव का सर्वेक्षण करने से पता चलता है कि आज यहाँ जहाँ गाँव है। पुराना गाँव उससे कुछ दूरी पर था। आजकल उस जगह पर खेती होती है। किसानों को कई बार खुदाई के दौरान यहां से प्राचीन वस्तुएँ मिलती हैं। प्राय: जली हुई अवस्था में। इस गाँव में एक प्राचीन बावड़ी भी है। इस भग्न बावड़ी की ईंटों को देखकर प्रतीत होता है कि यह मुगलकालीन होगी। गौरतलब यह भी है कि गाँव वाले मंदिर के बाहर कुएँ के पास एक स्थान पर पूजा करते हैं। उन्हें यह ज्ञान नहीं कि यह क्या है? ज्यादा पूछने पर बताते हैं कोई देवी हैं। दरअसल यह एक सती स्तंभ है। जैसा कि प्राय: सती स्थलों पर देखने में आता है- स्त्री पुरुष की युगल प्रतिमा। चांद-सूरज, और एक स्त्री का हाथ चूड़ियाँ पहने हुए। इस तरह की इस स्थान पर दो प्रतिमाएँ हैं। निश्चित ही इस स्थान पर कुछ स्त्रियाँ सती हुई होगी। गाँव में जली हुई अवस्था में निकली हुई वस्तुओं का निकलना इस बात का प्रतीक है, यहाँ पिंडारा काल या पूर्व में गाँव को जला दिया गया होगा। मुगल-मराठा और पिंडारगर्दी के दौर में यह सामान्य बात थी। साधारण आगजनी के बाद प्राय: लोग गाँव छोड़कर नहीं जाते थे। वैसे भी पिंडारगर्दी के समय में इस क्षेत्र में कई गाँवों को जला दिया गया था। ''अधिकांश गाँवों में पटेल तथा कृषक लगभग गायब ही हो गए थे। इसके अतिरिक्त जिले में ऐसा कोई भी आबाद ग्राम नहीं बचा, जो इन पंद्रह वर्षों (1803-1818) के दौरान एक या दो बार जलाया न गया हो।'' सती स्थल भी ऐसी ही दारुण कथा की ओर इंगित करते हैं। अनुमान है कि इस गाँव पर गुजरी त्रासदी से यह वीरान हो गया होगा और आसपास से इस गाँव में पुन: बसने का किसी में साहस नहीं बचा होगा। आपदा को झेलते बिश्नोई जब इस गाँव के आसपास आये होंगे, उन्हें यह वीराना मौजा बसने के लिहाज से उपयुक्त प्रतीत हुआ होगा।

नीमगाँव में बिश्नोई समुदाय का प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर का शिलान्यास मंहत श्री आनंदरामजी के

कर कमलों से हुआ था। इस मंदिर का उद्घाटन हुआ था अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के चतुर्थ अधिवेशन में। वाकायदा निमंत्रण पत्र ''श्री लाबुजी रावलजी पंवार'' की ओर से प्रकाशित हुए थे। यह निमंत्रण पत्र हरदा के ही 'हुसैनी छापाखाने' से मुद्रित करवाया गया था। सौभाग्य की बात है ग्राम नीमगाँव के पंवार परिवार के वंशजों के पास आज तक यह मूल निमंत्रण पत्र और कुछ फोटोग्राफ संरक्षित हैं। मेरा सुझाव है कि इस तरह की ऐतिहासिक धरोहरों को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय अभिलेखागारों में भी रखा जाना चाहिए। कम से कम इसके डिजिटल संस्करण तो अभिलेखागारों में रखे ही जा सकते हैं। पंवार परिवार को इस पर विचार करना चाहिए।

आखिर जो लोग बहुत कम संख्या में हरदा जिले में निवासरत रहे और जिनको अपनी जड़ों से दूर हुए अभी बहुत साल भी नहीं हुए थे। उन्होंने लगभग नौ दशक पूर्व अपना चौथा अधिवेशन करवा डाला। उनके भीतर अपने अस्तित्व को लेकर एक बेचैनी लगातार महसूस की जा सकती है। बिश्नोई समुदाय के भीतर इस बात की तीव्र उत्कंठा प्रतीत होती हैं। कुछ और उदाहरण इस बात की ओर इंगित करते हैं। संभवत: हरदा जिले में ऐसा कोई और दूसरा गाँव नहीं है, जहाँ तीन-तीन राज्यपाल और मुख्यमंत्री का आगमन हुआ हो। इस गाँव में पंचायत भवन का लोकार्पण पद्म विभूषण श्री हरि विष्णु पाटस्कर, राज्यपाल मध्यप्रदेश के हाथों सन् 1963 में हुआ। सन 2004 में श्री जम्भेश्वर मंदिर नीमगांव के स्वर्ण कलश आरोहण अवसर पर श्री बलराम जाखड़ राज्यपाल मध्यप्रदेश ने अपनी उपस्थिति दी। श्री भजनलाल पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा मंदिर में अनावरण अवसर पर नीमगांव में दिनांक 26 नवम्बर, 1981 को आये थे। न केवल राजनीतिज्ञ बल्कि प्रशासनिक अधिकारियों को भी नीमगांव के ग्रामीण सतत् रूप से बुलाते रहे हैं। गाँव की पाठशाला के भवन का उद्घाटन भोपाल संभाग के तत्कालीन आयुक्त आई.ए.एस. श्री एम. जी कर्णिकर के हाथों 13 दिसम्बर, 1960 को हुआ। ये सारे स्थूल उदाहरण हैं। पते की बात यह प्रतीत होती है कि बिश्नोई समुदाय में अपने विकास की चेतना तुलनात्मक रूप से पहले से ही रही है। यह गुण ग्राह्य किया जाना चाहिए। आज भी नीमगांव की तरह के साफ सुथरे गाँव हरदा क्या मध्यप्रदेश में भी कम ही देखने को मिलेंगे। गाँव में नाली और व्यवस्थित सड़कें बनी हैं। पूरे गाँव में एक भी व्यक्ति तम्बाकू, शराब, गाँजे, भाँग का आदी नहीं मिलेगा। गुरु जम्भेश्वर द्वारा प्रवर्तित इस पंथ में धूम्रपान का निषेध किया गया है। एक समुदाय अपने सिद्धांतों को कैसे जीवन में उतारता है, इसका यह साक्ष्य हैं। इसके विपरीत गाँव के युवा जिम और अखाड़े में शारिरिक सौष्ठव की कला सीखते अवश्य मिलेंगे। आज हरदा की कबड्डी यदि देश में मशहूर है, तो उसका अधिकांश श्रेय बिश्नोई समुदाय और खासकर नीमगाँव को है।

बिश्नोई समुदाय में ज्योतिष तंत्र-मंत्र और ब्राह्मण पुरोहितों की कोई भूमिका नहीं है। उनके लिए हर दिन पवित्र है। हर तिथि शुद्ध है। विधवा विवाह प्रचलित है और अब मृतक का दाह संस्कार होने लगा है। कुछ दशक पूर्व शव को दफनाने का रिवाज था। भारत में प्राय: जातियों को तोड़ने के बहुतेरे प्रयास हुए किन्तु एकमात्र गुरु जम्भेश्वर के प्रयास आज प्रामाणिक रूप से मौजूद दिखते हैं। बिश्नोई पंथ के निर्माण में कई जातियों ने गुरु जाम्भोजी के सिद्धान्तों में आस्था दिखाई और उनका अनुसरण किया। कालान्तर में वे सब अपनी निजी पहचान को तिरोहित कर पंथ के विचारों से एकाकार होते हुए, एक हो गई। ऐसे बिश्नोई समुदाय का निर्माण हुआ। गुरु जम्भेश्वरजी ने जातियों को तोड़कर नहीं, जोड़कर इतना एक कर दिया कि वे सब एक जाति बन गये। इस विलक्षणता को नमन किया ही जाना चाहिए।

-डॉ. धर्मेन्द्र पारे
सह प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल
E-mail: dharmendrapare@gmail.com

जम्भेश्वर महादेव मन्दिर, पुरी

जगन्नाथपुरी, उड़िसा

हमारे देश भारतवर्ष के पूर्व दिशा में ओड़िसा (उड़ीसा) राज्य के पुरी जिले में भगवान जगन्नाथजी का अति भव्य और विशाल मंदिर स्थित है।

पुरी नगर के हरचण्डीशाही से आगे समुद्र के किनारे गोडवाड़ाशाही मौहल्ले में जम्भेश्वर महादेव का अति प्राचीन, भव्य एवं विशाल मंदिर स्थित है।

कौन है जगन्नाथ ?

उड़िया भाषा के महान विद्वान कवि, लेखक एवं साहित्यकार पं. शारलादास ने उड़िया भाषा में महाभारत की रचना की, जिसमें वे लिखते हैं कि नीलांचल नामक पर्वत की उप्तिकाओं में आदिवासी सबर (भील) जाति के लोगों को एक नीले रंग का अति सुन्दर, चिकना तथा चमकीला पत्थर मिला। जबकि वह कोई पत्थर नहीं था वह तो नीलमणी था, जिसकी सबरों को कोई जानकारी नहीं थी। अत: सबरों ने उसे विष्णु भगवान का विग्रह मानकर नीलांचल की पहाड़ियों में गुप्त स्थान पर स्थापित कर पूजा अर्चना करने लगे।

विख्यात जरा सबर का नाना अजर शबर कालिन्दी (यमुना) नदी के किनारे एक पेड़ के नीचे उस पत्थर को स्थापित कर पूजन किया करता था। सबर लोग पत्थर, नीले रंग का होने के कारण उसे नीलमाधव कहने लगे।

एक बार सबर लोगों ने नीलमाधव को एक स्थान पर स्थाई करने के उद्देश्य से यमसंजीवनी पुरी में ले जा कर उस नीले पत्थर को एक पेड़ के नीचे पत्थर की एक विशाल शिला पर स्थापित कर दिया तथा सबर लोग पूजा और सुरक्षा करने लगे।

एक समय की बात है कि यादव अपनी कलह से समुद्र किनारे आपस में लड़ कर नष्ट हो गये। जिससे खिन्न होकर भगवान श्रीकृष्ण शान्ति की खोज में जगंल में चले गये।

एक पेड़ के नीचे व्यवस्थित पड़ी एक शिला पर विश्राम करने लगे, तथा पैर पर पैर चढ़ाकर सो गये। उनके पैर की पगथली में पदम का चिह्न था जो रात में भी प्रकाशित होता था। जब जरा सबर ने दूर से देखा तो रात्रि में कृष्ण के पैर में पदम का चिह्न चमकता हुआ नजर आया, तो जरा सबर को जंगली जानवर की आँख होने का भ्रम हुआ और उसने पाँव के पद्म के चिह्न को लक्ष्य करके तीर चला दिया, जिससे भगवान कृष्ण घायल हो गये। तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन को बुलाकर अंतिम संदेश देकर शरीर त्याग दिया।

अंतिम संदेश में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि मेरा अंतिम संस्कार ऐसी भूमि पर करना जहाँ आज दिन तक किसी का अंतिम संस्कार नहीं हुआ हो।

उस पवित्र भूमि का पता लगाकर वहीं पर मेरा दाह संस्कार करवाना अन्यथा मेरे पार्थिव शरीर का दाह नहीं हो सकता है, इस बात का सावधानीपूर्वक ध्यान रखना, जरा सी भी चूक नहीं होनी चाहिये। यदि जरा सी भी चूक हो जाती है तो कार्य में विघ्न और विलम्ब हो सकता है।

भगवान कृष्ण के देह त्याग के बाद युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डव जरा शबर को साथ लेकर उक्त स्थान की खोज में पूर्व दिशा की ओर समुद्र के किनारे-किनारे नीलांचल पर्वत की ओर चल पड़े, जहाँ से यह पत्थर प्राप्त किया था।

वहाँ पहुंच कर नीलांचल पर्वत पर दाह संस्कार न करके उसके समीप समुद्र के तट पर जहाँ बालू रेत के टिब्बे थे, जहाँ पर जरा सबर का निवास था, वहाँ पर दाह संस्कार सम्पन्न कर दिया। भगवान कृष्ण की पूरी देह तो भस्मीभूत हो गई परन्तु कपाल दग्ध नहीं हो पाया।

अत: अध जले कपाल को समुद्र में बहा दिया तथा पाण्डव द्वारिका होकर हस्तिनापुर चले गये तथा राजकाज अर्जुन के पोते को देकर पाँचों पाण्डव तथा द्रौपदी सहित हिमालय गलने चले गये। श्रीकृष्ण का अधजला कपाल रात्रि में मणी की भाँति चमकता हुआ समुद्र पर विराट ज्योति के रूप में तैरने लगा। उसी समय जब विश्वावसु शबर ने समुद्र पर प्रकाशित हो रहे ज्योति स्वरूप पिण्ड को देखा तो आश्चर्य चकित रह गया।

विश्वावसु शबर ने उस परम विग्रह को प्राप्त कर नीलकंदर की गुफा में रखकर पूजा-अर्चना करने लगा। उसी समय विष्णु भक्त पाण्डव वंशी मालवा का राजा इन्द्रधुम्न ने विष्णु पूजा से आकृष्ट होकर विष्णु प्रतिभा की खोज में अपने दूतों को चारों दिशाओं में भेजा। तीन दिशाओं के दूत विष्णु विग्रह न पाकर वापस लौट आये। परन्तु पूर्व दिशा का दूत ब्राह्मण विद्यापति घूमते-घूमते विश्वावसु शबर के गाँव आया। विश्वावसु शबर की पुत्री ललीता ने पिता की अनुपस्थिति में मालवा के राजा इन्द्रधुम्न के दूत ब्राह्मण विद्यापति का यथायोग्य स्वागत- सत्कार किया।

ब्राह्मण विद्यापति कुछ दिन तक विश्वावसु के घर पर ही ठहरा। विश्वावसु प्रतिदिन प्रात:काल जंगल को जाते तथा सायंकाल लौटकर आते। तब एक बार विद्यापति ने ललिता से पूछा कि तुम्हारे पिताजी प्रतिदिन जंगल में कहाँ और क्यों जाते हैं ? तब ललिता ने कहा कि मेरे पिताजी प्रतिदिन भगवान विष्णु के विग्रह नीलमाधव नीलमणी का पूजन करने के लिए नीलांचल पर्वत की नीलकंदरा में जाते हैं। यह सुनकर विद्यापति ने मन ही मन सोचा कि हो ना हो यह वही विष्णु भगवान की प्रतिमा होगी जिसकी खोज में हम भटक रहे हैं।

कुछ समय बाद ब्राह्मण विद्यापति ने शबर विश्वावसु से ललिता से विवाह का प्रस्ताव रखा जो कुछ ना नुकर के बाद विश्वावसु सहमत हो गया तथा ललिता और विद्यापति का विवाह हो गया। आर्य तथा अनार्य जाति का मिलन हो गया।

कुछ समय बीतने के बाद विद्यापति ने विश्वावसु से विष्णु विग्रह नीलमाधव के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की परन्तु विश्वावसु ने साफ इंकार कर दिया। कुछ अनुनय-विनय के बाद शबर विश्वावसु ब्राह्मण विद्यापति को आँख बांध कर नीलकंदरा तक ले जाकर नीलमाधव के दर्शन करवाने की शर्त पर पर राजी हो गया। विद्यापति को ललिता ने सरसों की एक पोटली बांध कर दी, जो उसने रास्ते भर में छिड़क दी तथा वर्षा होने पर सरसो ऊग आई, जिससे विद्यापति नीलकंदरा तक का रास्ता जान गया।

विद्यापति का संदेश पाकर इन्द्रधुम्न सेना लेकर चढ़ आया तथा शबर विश्वावसु को कैद कर लिया परन्तु नीलमाधव प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि विश्वावसु ने कहा कि नीलमाधव को आप मालवा नहीं ले जा सकते हैं, यदि आप विष्णु विग्रह नीलमाधव को यहाँ अन्यत्र ले जाने का प्रयास करोगे तो नीलमाधव लुप्त हो जायेगा। अत: मालवा के राजा इन्द्रधुम्न तथा रानी गंडुची ने एक सौ बीस हाथ ऊंचे इस विशाल मंदिर का निर्माण कराया परन्तु स्थापना के वक्त नीलमाधव नीलमणी गायब हो गई।

तब राजा को आकाशवाणी द्वारा सूचना मिली कि समुद्र में एक विशाल काष्ट खण्ड ब्रह्मदारू तैर रहा है, उसे प्राप्त कर उसकी मूर्ति बनाकर स्थापित कर पूजा प्रारम्भ करो, राजा ने वैसा ही किया।

आज दिन तक कृष्ण, बलभद्र, सुभद्रा व सुदर्शन चक्र की मूर्ति लकड़ी की बनाकर स्थापित कर उसका पूजन किया। कुछ नियत समय के बाद पुन: ब्रह्मदारू काष्ट प्राप्त कर पुरानी मूर्ति को हटाकर नई स्थापित की जाती है जिसे नवकलेवर कहते हैं। समय के साथ यह मंदिर कई बार बना और कई बार नष्ट हुआ।

वर्तमान मंदिर का निर्माण बारहवीं शताब्दी में उड़ीसा के राजा अनन्त वर्मन चोड़गंदेव ने शुरू करवाया तथा उसके पोते अनंग भीमदेव ने पूरा करवाया। इस समय मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था को प्राप्त हो रहा है तथा अलग-अलग स्थानों से विशालकाय पत्थर टूट कर गिर रहे हैं। उड़ीसा सरकार मंदिर के रखरखाव व व्यवस्था पर करोड़ों रुपये का बजट प्रति वर्ष खर्च भी करती है।

इस मंदिर की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं है। शबर (भील) और ब्राह्मण एक साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। यहाँ महाप्रसाद भोग भात (चावल-दाल-सब्जी) का लगता है। जिसका छुआ-छूत तथा उच्छिष्टता (जूठन) का दोष नहीं लगता है, भील और ब्राह्मण एक पत्तल में भोजन करते हैं तथा व्रत और उपवास में भी जगन्नाथजी के भात का महाप्रसाद ग्रहण कर सकते हैं, फिर भी व्रत, उपवास टूटता नहीं है।

इस मंदिर ने कई उतार-चढ़ाव समय के साथ देखें है। कई बार विधर्मी मुसलमानों ने इसे लूटा तथा तोड़ा

भी, कहते हैं कि अंग्रेजों ने कोणार्क के सूर्य मंदिर को बारूद से उड़ाने के बाद पुरी के जगन्नाथ मंदिर को भी उड़ाना चाहते थे। परन्तु किन्ही कारणों से यह मंदिर बच गया। इस स्थान पर आदि जगद्गुरु शंकराचार्य ने मठ की स्थापना कर इसके महत्व को प्रतिपादित किया। चैतन्य महाप्रभु ने यहाँ रह कर भक्ति की तथा संकीर्तन मंडलियों की स्थापना की जिसे कीर्तन करते हुए आज भी पुरी ही नहीं पूरे उड़ीसा में देखा जा सकता है। भगवान आदि विष्णु के इस पावन धाम जगन्नाथ पुरी में दर्शनार्थ, तीर्थाटनार्थ तथा अन्वेषणार्थ कई संत, महात्मा व पथप्रदर्शक पुरी आते रहे हैं, जिसमें संत कबीर, गुरु नानक, भक्तमति मीरा, सूर, तुलसी, रैदास, वल्लभाचार्य, रामानंदाचार्य, निम्बार्काचार्य, रामानुजाचार्य आदि मुख्य हैं।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने भी अपने जीवन काल में तीन बार जगन्नाथ पुरी का भ्रमण किया तथा एक बार दस दिन, दूसरी बार चार से छह माह तथा तीसरी बार एक वर्ष से ऊपर इस उड़ीसा क्षेत्र में रहे। बिश्नोई पंथ का प्रचार-प्रचार किया। आज भी कंधमाल जिले में बिश्नोई (बिसोई) निवास करते हैं। जिसमें स्वतंत्रता सेनानी चक्र बिश्नोई तथा नक्सलवादी दयानिधि बिश्नोई विख्यात रहे हैं।

उड़ीसा का एक आदिवासी बाहुल्य बहुत बड़ा तबका बिश्नोई पंथ में दीक्षित हुआ था, ऐसा मेरा मानना है, जो समय के साथ बिश्नोई संतों और समाज के सम्पर्क में नहीं रहने के कारण पंथ से विचलित हो गया तथा बिश्नोई से बिसोई हो गया तथा मुख्य धारा से भटक कर जहाँ था वहीं चला गया।

एक बार गुरु जम्भेश्वर भगवान शिष्य मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए समुद्र किनारे बसे उत्कल प्रदेश की आदि विष्णु की नगरी पुरी पधारे, जिसे जगन्नाथ पुरी भी कहते हैं। 'जगन्नाथ' जगतपति जगदीश भगवान विष्णु का ही एक प्रिय नाम है।

सबदवाणी के सबद संख्या 67 शुक्ल हंस में 'काहिंदा सिंध पुरी विश्राम लियो' तथा 'फिर-फिर दुनियां परखै लियो', एवं सबद संख्या 115 में 'खिण एक सिंध पुरी विश्राम लियो' कहकर इसकी पुष्टि करते हैं। जिस समय भगवान जम्भेश्वरजी पुरी पधारे तथा समुद्र किनारे रेत के विशाल और ऊंचे टीले पर आसन लगाया। उस समय पुरी क्षेत्र में चेचक रोग भंयकर रूप से फैला हुआ था। हजारों लोग इस महामारी से मर रहे थे, परन्तु कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। जब लोगों ने देखा कि एक महायोगी अवधूत समुद्र किनारे आसन लगाये बैठे हैं, जो महातेजस्वी लग रहे हैं। मरता क्या नहीं करता, लोगों ने जाकर चेचक रोग से मुक्ति की अरदास की, गुरु जाम्भोजी ने सबको पाहल (अभिमंत्रित पवित्र जल) पिलाकर हजारों लोगों को चेचक से मुक्ति दिलाई तथा यह खबर सुनकर दूर-दूर से लोग दर्शनार्थ आने लगे। यह वहां के लोकमानस में प्रचलित है।

उस समय उत्कल प्रदेश के राजा की पटरानी भी चेचक से पीड़ित थी तथा मरणासन्न की स्थिति में पहुँच चुकी थी। जो कि गुरु महाराज के आसन तक पहुँचने में सक्षम नहीं थी। तब राजा के आग्रह पर गुरु जाम्भोजी ने उनके महल में पधार कर रानी को पाहल पिलाकर स्वस्थ किया। गुरु जम्भेश्वरजी भ्रमण पर प्रस्थान कर गये। इससे प्रभावित होकर रानी ने गुरु महाराज के लिए एक विशाल मंदिर का निर्माण करवाया जिसमें बावन देवालय हैं। मंदिर के निर्माण के बाद रानी समराथल धोरे पर विराजमान गुरुदेव के दर्शन करने पधारी तथा जाम्भोजी से मंदिर के उद्घाटन करने तथा भगवान विष्णु की मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करने का आग्रह किया। गुरुदेव ने रानी को समझाते हुए कहा कि भगवान विष्णु तो निराकार है और कण-कण में विराजमान है। तब गुरु महाराज की आज्ञा से रानी ने विशाल यज्ञ किया तथा तथा बावन मंदिरों में बावन यज्ञवेदी तथा दीप वेदी का निर्माण करवाया जहाँ पर यज्ञ तथा दीपयज्ञ करने का आदेश दिया, जो आज भी विद्यमान है। उस मंदिर को गंडुची देवी का मंदिर कहते हैं।

गंडुची देवी भगवान विष्णु के अनन्य भक्त पांडव वंशी राजा इन्द्रधुम्न की पत्नी तथा महान विष्णु भक्त थी। उसी के नाम से उसके बाद वहाँ की राजाओं की रानियों को उनके सम्मान में गंडुची की पदवी दी जाने लगी। जिस रानी ने बावन विष्णु मंदिर बनाये थे उसे भी सम्मान से 'गंडुची' कह कर पुकारते थे। समुद्र किनारे जिस टीबे पर गुरु जाम्भोजी ने आसन लगाया था,

जम्भेश्वर महादेव मन्दिर, पुरी

कालान्तर में वहाँ के शासकों तथा भक्तों ने वहाँ पर भव्य तथा विशाल मंदिर का निर्माण कराया, जिसे जम्भेश्वर महादेव मन्दिर कहते हैं।

यह मंदिर जगन्नाथजी के मंदिर से पश्चिम दिशा में समुद्र के किनारे हरचंडीशाही से आगे गोडवाड़ाशाही में आया हुआ है, (शाही वहाँ पर मौहल्ले को कहते हैं) जो कि पाँच-छह फीट जमीन के अंदर नीचे है, भव्य तथा विशाल मंदिर बना हुआ है। जिसमें काले रंग का स्फटिक पत्थर का शिवलिंग स्थापित है तथा किसी राजा की बनवाई हुई पाव किलो (250 ग्राम) सोने की मूर्ति विद्यमान है, जिसमें एक युवा सन्यासी (स्वामी विवेकानंद सदृश) दृष्टिगोचर होता है, जिसने एक अधोवस्त्र पहना हुआ है, तथा तन पर भी एक वल्कल वस्त्र धारण किये हुए है, दाढी-मूछ नजर नहीं आती है, सिर का मुण्डन किया हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है परन्तु सिर पर शिखा नहीं है तथा तन पर कहीं सूत्र का आभास नहीं होता है।

यह मूर्ति मुझे नहीं दिखाई गई परन्तु इसकी पीतल की बनी डुप्लीकेट मूर्ति दिखाई गई तथा बताया गया की यह स्वर्ण प्रतिमा की नकल है। इस मंदिर के पुजारी लाल रंग की पोशाक धारण करते है तथा मूल रूप से मारवाड़ के राजगुरु पुरोहित है, उनके एक वृद्ध पुरोहित (जिनका नाम भी जम्भेश्वरदास है) ने बताया कि हमारे पूर्वजों को गुरु जाम्भोजी ने राजा मालदेव के आग्रह पर मारवाड़ से लाकर यहाँ बसाया था।

'जम्भेश्वर घाट' समुद्र किनारे जहाँ गुरु महाराज ने आसन लगाया था, उस किनारे को आज भी महोदधी जम्भेश्वर घाट कहते हैं। इस घाट पर स्नान करने वाले को यमफांस से छुटकारा मिल जाता है। मृत्यु के बाद भी लाश को इस घाट पर लाकर समुद्र में बहाया जाता है। इस घाट पर सर्वाधिक चहल-पहल रहती है तथा देशी-विदेशी पर्यटकों की भीड़ रहती है। बड़े-बड़े व मंहगे व आधुनिक होटल भी इसी घाट पर विद्यमान हैं।

'श्रीमंदिर में जम्भेश्वर मंदिर' पुरी के जगन्नाथजी के निज मंदिर परिसर में श्रीमंदिर के दक्षिणी भाग में विशाल वट वृक्ष (कल्पवृक्ष) के पास श्रीजम्भेश्वर मंदिर स्थित है, जिसे पंच महादेवों में मुख्य महादेव कहा जाता है (जम्भेश्वर महादेव, नीलकंटेश्वर महादेव, मार्कण्डेश्वर, लोकनाथ, कपालमोचन)। यहाँ इसे हरिहर रूप यानि विष्णु और शिव का संयुक्त रूप मानते हैं तथा पांचों पाण्डवों में ज्येष्ट युधिष्ठिर भी मानते हैं। जबकि गोडवाड़ाशाही तथा महोदधी घाट पर साक्षात यमराज का अवतार मानते हैं।

यहाँ पर भूरे रंग के पत्थर का शिवलिंग स्थापित कर रखा है तथा एक मूर्ति स्थापित कर रखी है, जिसमें आधा शरीर विष्णु का तथा आधा शरीर शिव का है तथा एक अष्ट धातु की मूर्ति भी है जो गोडवाड़ाशाही वाली सोने की मूर्ति की प्रतिकृति है। जिसमें एक युवा साधु रूण्ड-मुण्ड तथा उतरिये वस्त्रों में दिखाया गया है। शायद यह रूप जाम्भोजी के युवावस्था का होगा। पुरी के घाट पर समुद्र बहुत अधिक शोरगुल तथा अत्यधिक गर्जना करता है, इतना शोरगुल कहीं पर समुद्र तट पर नहीं होता है उसमें विशेषकर महोदधी जम्भेश्वर घाट पर तो डर लगता है, मुझे पुरी में पांच दिन रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा मैंने सुबह-शाम अलग-अलग दस घाटों पर स्नान किया जिसमें समुद्र सर्वाधिक गर्जना महोदधी जम्भेश्वर घाट पर करता है।

इसलिये जम्भेश्वर भगवान सबदवाणी में शुक्ल हंस सबद में 'गाजै बाजै घुरै घुर हरे करे इंवाणी आपै बलूं' कहा है। शायद जिस प्रकार नेपाल में बिश्नोइयों को नौबीसा कहते है उसी प्रकार उड़िसा में बिसोई कहते हैं। यह शोध का विषय है।

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में लिंगनाथ महादेव का मंदिर है जो कि जगन्नाथ मंदिर की तरह भव्य व

विशाल है, उसमें भी दक्षिण भाग में जम्भेश्वर महादेव का मंदिर है। पुरी के साक्षीगोपाल तथा लोकनाथ मंदिरों में भी छोटे-छोटे जम्भेश्वर महादेव के मंदिर है।

यम द्वितिया के समय लगभग हर मंदिर में जम्भेश्वर महादेव के नाम से एक छोटा मंदिर खोल दिया जाता है, क्योंकि वहाँ लोग जम्भेश्वरजी को नामसाम्य से यमराज का अवतार मानते हैं तथा उसके बाद सीजनल किसी अन्य की मूर्ति रख दी जाती है।

उड़ीसा में कोणार्क का सूर्य मंदिर प्रसिद्ध है जो पुरी से 65-70 किलोमीटर दूर है। यह विशाल व अति भव्य मंदिर अब यह भग्नावशेष रूप में विद्यमान है, कहते हैं कि अंग्रेजों ने इसे बारूद लगाकर उड़ा दिया था। मुख्य मंदिर के आस-पास कई अन्य मंदिरों के अवशेष भी उपलब्ध हैं। जब गाइड से पूछा कि सूर्य मंदिर के अलावा ये भग्न मंदिर किस-किसके रहे होंगे। तब उसने नाम गिनाये उसमें जम्भेश्वर महादेव का भी नाम आया। पुरी नगर से लेकर समुद्र के किनारे-किनारे 100 कि.मी. ×20 कि.मी क्षेत्र को बालीघाई नाम से पुकारते हैं जिसका उड़िया भाषा में अर्थ होता है रेत के धोरे। इस बालीघाई क्षेत्र में एक विशाल हिरण अभ्यारण है। कहा जाता है कि जो इस अभ्यारण में हिरणों की रक्षा करता है उसको मृत्यु के बाद यमराज सताता नहीं है यानी जम्भेश्वर महादेव की उस पर कृपा रहती है। यहाँ पूरे क्षेत्र में आसपास कोई दूसरा हिरण अभ्यारण नहीं है क्योंकि यहाँ के लोग माँसाहारी है। चावल और मछली ही इनका मुख्य भोजन है।

यहाँ तक कि ये लोग अपने घरों में जगन्नाथजी को भी मच्छी का भोग लगा देते है, वहाँ हिरणों को बचाना एक आश्चर्य है। पूरे उड़ीसा प्रदेश में गुरु महाराज के जगन्नाथपुरी यात्रा के साक्षात प्रमाण यत्र-तत्र बिखरे पड़े है, इन्हें संकलित करने की आवश्यकता है। यहाँ के कुछ पर्व व त्यौंहार-

1. **चंदन यात्रा :** वैशाख शुक्ला तृतीया से ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी तक 21 दिन की चंदन यात्रा निकलती है जिसमें जम्भेश्वर महादेव सहित पंच महादवों के विग्रहों को चन्दन तालाब पर स्नान तथा नौका विहार कराया जाता है तथा इक्कीस दिनों तक उत्सव मनाया जाता है।
2. **जन्माष्टी उत्सव :** भगवान कृष्ण का जन्म दिन मनाया जाता है तथा बलदेव, सुभद्रा, रूक्मणी तथा जम्भेश्वर महादेव की झांकी निकाली जाती है।
3. **श्रावण अमावस्या को व्रत:** उपवास रखते है तथा जगन्नाथजी के सेवकों का उत्सव मनाते हैं।
4. **आषाढ़ शुक्ल** द्वितिया को जगन्नाथजी की रथ यात्रा निकलती है जो लगभग दस दिन तक गुंडिचा मंदिर में विश्राम करती है। पुराणों में गुंडिचा मंदिर को अश्वमेघ यज्ञ का पीठस्थल कहा गया है, वर्तमान में गुंडिचा मंदिर के ठीक सामने चार फीट ऊंची तथा तेरहा फीट लम्बी एक ही पत्थर की बनी यज्ञवेदी स्थित है।
4. **कार्तिक शुक्ल** द्वितिया को यम द्वितिया कहते हैं इस दिन जम्भेश्वर महादेव का विशाल मेला गोडवाड़ाशाही में लगता है तथा सब जगह जम्भेश्वर महादेव की पूजा होती है।
5. **फाल्गुन शुक्ल** पूर्णिमा यानि होली के दिन एक दहनोत्सव मनाया जाता है जिसमें होलिका का दर्पदलन होता है। यहाँ होली के दिन जम्भेश्वर महादेव का एक नाम मदनमोहन के नाम से दोल महोत्सव भी मनाया जाता है तथा फगडोल यात्रा होती है एवं मदनमोहनजी को झूला झुलाया जाता है।
6. **फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी** (महाशिवरात्रि) के दिन पुरी के लोकनाथ महादेव को जिसे जम्भेश्वर महादेव का ही रूप कहा जाता है क्योंकि जम्भेश्वर महादेव को भी हरिहर रूप कहते हैं और लोकनाथ महादेव को भी हरिहर रूप कहते हैं। इन्हें बिल्वपत्र तथा तुसलीदल दोनों का भोग लगता है।
7. **महालय अमावस्या** के दिन जरूरतमंदों को अन्न का दान किया जाता है तथा भगवान के महाभोग के लिए चावल, दाल व अन्न दान किया जाता है।
8. **मलमास की अमावस्या:** प्रति तीन वर्ष बाद मलमास आता तब मलमास शुरु होने के पूर्व दिन

की अमावस्या से पुरुषोत्तम मंदिर खुलता है जो अगली अमावस्या तक खुला रहता है, तथा भगवान वराह नृसिंह की पूजा होती है। महिलाएं विष्णु से वर प्राप्ति के लिए व्रत-उपवास करती है तथा खीर का प्रसाद बनाकर भोग लगाती है।

9. **आषाढ अमावस्या** के दिन नेत्रोत्सव मनाया जाता है।
10. **श्रावण अमावस्या** को चितालागी अमावस्या कहते हैं और भगवान के झूलन यात्रा महोत्सव मनाया जाता है।
11. **भाद्रपद अमावस्या** को सप्तपुरी अमावस्या उत्सव मनाया जाता है।
12. **मार्गशीर्ष अमावस्या** को दीपदान कर उत्सव मनाया जाता है।
13. **पौष अमावस्या** को वकुल अमावस्या कहते हैं इस दिन वराह जन्मोत्सव मनाया जाता है।
14. **प्रत्येक अमावस्या** को नक्षत्र वन्दना की जाती है।
15. **अमावस्या** यदि प्रतिपदा स्पर्श करती हो तो अमावस्या का पूजन किया जाता है।
16. **अमावस्या** को यदि सूर्य ग्रहण हो तो स्नान के बाद जगन्नाथ जी का पूजा की जाती है।
17. **भाद्रपद अमावस्या** को वस्त्रहरण लीला का आयोजन भी करते हैं।
18. **माघ अमावस्या** से बसंत पंचमी तक पदमवेश शयन महोत्सव मनाया जाता है।

जगन्नाथजी की सेवा में तीन सेवाएं वहाँ स्थानीय बिश्नोई जिन्हें बिसोई कहा जाता है, के अधिकारी हैं।

1. **कुम्भ सेवक बिसोई:** मिट्टी के बर्तन आपूर्ति करते हैं।
2. **तांबा सेवक बिसोई :** ताम्बें के बर्तनों की आपूर्ति करते हैं।
3. **गायणी बिसोई:** निज मंदिर में रास लीला गायन करना, यह सेवा अब बंद कर दी गई है।

एक बात जानकर आप आश्चर्य करेंगे कि पुरी मंदिर में प्रतिदिन हजारों मिट्टी व तांबे के बर्तनों की आवश्यकता रहती है क्योंकि वहां महाभोग प्रसाद बाजार में बिकता है जो बर्तनों सहित बिकता है, प्रतिदिन दो सौ क्विंटल से पाँच सौ क्विंटल चावल का प्रसाद बिकता है, ऐसा मुझे ज्ञात हुआ है। महाभोग वितरण में मिट्टी के बर्तन व खोमचे, पत्तल तथा बांस की टोकरियां तथा कपड़े की थैलियां काम में ली जाती हैं। प्लास्टिक की थैलियां या अन्य पैकिंग जगन्नाथ तीर्थ क्षेत्र में देखने को नहीं मिलेगी।

पुरी क्षेत्र के मठ:

यहाँ एक नहीं हजारों मठ है, हर सम्प्रदाय के मठ है। शंकराचार्य मठ, नानक मठ, कबीर मठ, रामानुज मठ, रामानंदी मठ, वल्भाचार्य मठ, चैतन्य मठ, बौद्ध मठ, जैन मठ हजारों की संख्या में अनगिनत मठ हैं। उसमें एक 'खिलेरी मठ' भी है। शायद बुड्ढोजी खिलेरी ने गुरु जाम्भोजी के लिए बनाया होगा। यह भी शोध का विषय है।

मुझे जम्भेश्वर महादेव जगन्नाथ पुरी यात्रा, खोज व दर्शन करने की इच्छा तो काफी समय से थी, क्योंकि मेरा प्रोजेक्ट है 'भूली बिसरी जांभाणी विरासत' की खोज। इस निमित्त दिनांक 25.10.2017 से 30.10.2017 तक पुरी यात्रा का सुयोग बना। इस प्रकार जगन्नाथ पुरी में स्थित जम्भेश्वर महादेव के दर्शन तथा जाम्भोजी की जगन्नाथपुरी की यात्रा और जाम्भाणी परम्पराओं के प्रमाणों को कम समय में, मेरी तुच्छ बुद्धि के अनुसार तथा भाषा की बड़ी समस्या तथा तीर्थस्थलोजन्य समस्याओं से सामना करते हुए जो कुछ सूचनाएं प्राप्त कर सका, आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। जो कुछ मैं अन्वेषण कर सका वह अपने आप में पूर्ण व अंतिम नहीं है, हो सकता है कहने वाले ने कुछ और कहा होगा तथा मैं और अर्थ लगा बैठा हो।

अत: विद्वानों और खोज कर्ताओं से आग्रह है कि और अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। मेरे से कोई त्रुटि रह गई हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ।

-**उदयराज खिलेरी**, अध्यापक
गाँव मेघावा, तह. चितलवाना,
जिला जालोर (राजस्थान)
मो. : 9828751199

बधाई सन्देश

सुरेश कुमार सुपुत्र स्व. श्री हंसराज भादु, निवासी रावतखेड़ा, हिसार का चयन शूटिंग बॉल खेल में राष्ट्रीय टीम में हुआ है। आप हरियाणा की शूटिंग बॉल टीम के कप्तान भी हैं। श्री भादू की टीम ने लगातार पाँच बार राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीती है और आपको तीन बार नेशनल हीरो का खिताब भी मिला है।

गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में आयोजित परेड का हरियाणा की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए कुमारी खुशबू बिश्नोई सुपुत्री स्व. श्री मोहन जाणी निवासी गांव धान्सू, जिला हिसार ने घुड़सवारी में बेहतरीन प्रदर्शन करके रजत पदक हासिल किया। खुशबू ने दूसरी बार गणतंत्र दिवस परेड में पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ की ओर से हिमाचल प्रदेश निदेशालय का प्रतिनिधित्व किया है। इनकी इस उपलब्धि पर हरियाणा सरकार ने भी खुशबू को सम्मानित किया। इस दौरान आयोजित समारोह में हरियाणा के राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी, शिक्षा मंत्री रामबिलास शर्मा, ज्योति अरोड़ा प्रधान सचिव उच्चतर शिक्षा, हरियाणा सरकार और एनसीसी निदेशालय हरियाणा के काफी अधिकारी मौजूद थे।

श्री महाबीर बिश्नोई सुपुत्र श्री भागीराम बैनीवाल, निवासी सीसवाल, जिला हिसार को हरियाणा के महामहिम राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी ने खेलों में सराहनीय योगदान के लिए भिवानी में आयोजित तीसरे भारत केसरी दंगल में सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि श्री महावीर बिश्नोई को भारत सरकार कुश्ती खेल में योगदान के लिए द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित कर चुकी है।

मोहित कुमार सुपुत्र श्री राजेश कुमार गोदारा, निवासी गांव विलोचां वाला, तह. पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़ ने 30-31 जनवरी, 2018 को थाईलैंड में आयोजित एशिया हैंडो कराटे प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए रजत पदक प्राप्त किया है।

डॉ. विमला बिश्नोई धर्मपत्नी श्री राजेश बिश्नोई (उप-प्रबंधक, RSMML), निवासी गंगाशहर, बीकानेर को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा दर्शनशास्त्र विषय में शोध कार्य करने के लिए पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

दुर्गादासजी कृत हरजस

(राग सोरठि)

पहळाद उबारण हार जी,

हिरणाकस मारणहार हो, सोई संतां तारण साम्यजी ॥1॥(टेक)
नीवाई मां राखिया, मुंजारी सुत दोय।
ऊपरि पावक प्रजल्यौ, स्याम उबारया सोय॥2॥
साच सील सतसंग रहयौ, नगरि वीकाणै जाय।
खडग उभारयौ त्रियां नै, हाथ गहयौ रुघराय॥3॥
लाखा मंडप क्यौं जळै, स्याम करै जां सार।
लज्या राखे द्रौपती, दुसासण री वार॥4॥
गोकळ उपरि गरबीयो, राजा इंद किधो अहंकार।
अनड़ उधारयौ भीड़, बाल ब्रह्मचार॥5॥
पूरबियां पंथ चालतां, राणौं मांगै दाण।
सीत तणी सुळझांवणी, राणी झाली नै सहनाण॥6॥
भगवंत भगतां तारणै, गुर धारयौ भगवों भेख।
कमधज राजा कारणै, गुर धारयौ भगवों भेख॥7॥
केता प्रवाड़ा तै किया, गुर कहत न पाऊं पार।
दुरग कहै दीदार दयौ, गुर तूठां लाभै सार॥8॥

हे स्वामी, आप प्रह्लाद का उद्धार करने वाले, हिरणाकश्यपु को मारने वाले और संतों को तारने वाले हो। कुम्हारी ने बिल्ली के दो बच्चों को मिट्टी के बर्तनों के बीच निवाही में रख दिये और ऊपर अग्नि जला दी थी, अग्नि तेज होने पर उसे वे बच्चे याद आये, तब उनको आपने ही बचाया था। सच, शील, सत्संग के कारण आपने नगर बीकानेर में निवास किया था, तब वहां एक स्त्री पर तलवार झौंकने वाले का हाथ पकड़कर स्वयं जाम्भोजी महाराज ने उस स्त्री को बचाया था। लाक्षाग्रह में पाण्डव कैसे जल सकते थे, जिनके सहायक कृष्ण भगवान थे, जिन्होंने द्रौपदी की लाज रखी और दु:शासन से उसे बचाया था। गोकुल पर जब इन्द्र ने क्रोध करके भयंकर वर्षा की थी, तब आपने ब्रज को बचाया, बाल ब्रह्मचारी भीम का भी आपने उद्धार किया था। पूर्व के लोग जब आपके दर्शनार्थ आ रहे थे, तो मेवाड़ के राणा ने कर मांगा था, तब आपने (जाम्भोजी ने) मेवाड़ की झाली रानी को सीता की सुलझावणी की निशानी बताकर, उसका पूर्व जन्म याद करवाया था। भगवान ने भक्तों को तारने के लिए भगवें वस्त्र धारण किये हैं, सम्वत् 1518 में आपने (जाम्भोजी ने) राव जोधा (जोधपुर) को परचा दिया था। हे गुरु जाम्भोजी महाराज, आपने अनेक प्रवाड़े (परचा) किये हैं, मैं उनका वर्णन नहीं कर सकता। कवि दुर्गादास जी कहते हैं कि आप मुझे दर्शन दो, आपकी कृपा से ही मैं पार हो पाऊंगा।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

भात के गीत

फरवरी अंक का शेष भाग...

इडूणी टांगी ए बीरा चम्पा डाळी जै ओ।
सरवरिय गी ए बीरा ऊंची-नीची पाळ जै ओ।
एकर चढ़ू एकर बीरा उतरूं जै ओ।
चढ़ती-उतरती गा बीरा घसग्या ए पैरवा जै ओ।
अमला री डाली सुवटो बोलियो जै ओ।
तूं रे सुवटिया धरम गो बीर जै ओ।
जूनेगढ़ गै मारगां में बीरा दीसै आवन्ता जै ओ।
झीणी-झीणी बाई उड़ै है खेव जै ओ।
जूनेगढ़ गै बाई मारगां में जै ओ।
के बीरा जायल रा जाट जै ओ ?
के खींयाळै रा कहियो चौधरी जै ओ ?
ना सां बाई म्है जायल गा जाट जै ओ।
ना सां खींयालै रा बाई चौधरी जै ओ।
म्है सा रामू जी साजण रा सिव जै ओ।
म्है सा (अमुक स्थान) गा चौधरी जै ओ।
म्है सा रामी बाई गा बीर जै ओ।
राजू जी बननोई गा कहिये भातवी जै ओ।
चिलक्या-चिलक्या ओ बीरा भावजड़िया गा चीर जै ओ।
भाई रे भतीजा गा मेमण मोळिया जै ओ।
बाज्या-बाज्या ओ बीरा बल्दा गी टाल जै ओ।
घोड़ला गा बाज्या बीरा गुगरा जै ओ।
आया-आया ओ बीरा ढ़ोल घुराय जै ओ।
नव गज धरती बीरा दल चढ़ी जै ओ।
चालो-चालो देवर, बीरा आया भातवी जै ओ।
दुखै-दुखै भावज डावोड़ी आंख जै ओ।
भारत सहरावै सारी नगरी जै ओ।
लाया-लाया ओ बीरा सुसरै ने कामळ जै ओ।
सासु नै लाया लुंकार जै ओ।
लाया-लाया ओ बीरा देवर जेठा नै चादर जै ओ।
नणदा नै बोरंग चूंदड़ी जै ओ।
बहण भाणेज नै बीरा कापड़ा जै ओ।
जीजा नै लाया ओ बीरा हरियाण रूंमाल जै ओ ॥1 ॥

--00--

बीरा नौकर मत जाई रे, मेरी फूल कंवर गो ब्वाव।
हां ए बाई मंडग्यो है तो मंड जाण दे, हूं आय भरूंलो भात।
हां ओ बीरा गळ गी गलसरी ल्याई रे, थाळी में पांच हजार।
हां ओ बीरा चढ़ण गो घोड़लो ल्याई रे, दूवण नै भूरी भैंस।
हां ओ बीरा पगा में पाजेब ल्याई रे, मैंरै गळ गो नवसर हार।
हां रे बीरा भाणेजा नै कुड़ता ल्याई रे, तेरे जीते नै हरियो रूमाल।
हां रे बीरा सासु नै तीवळ ल्याई रे, मेरै सुसरै नै कामळ।
जेठा नै चादर ल्याई रे, जेठाणियां नै पिळै गो भेस।
देवर नै लंगोटी ल्याई रे, नणदा नै दिखणी गा चीर।
बीरा इतणो सजे ते आई रे, नहीं आणे गी कर देयी टाळ।
बीरै चढ़ण गो घोड़ो बेच्यो, भावज गो बेच्यो नवसर हार।
मेहला सुं भावज उतरी, माथै में तोड़ी चार।
बहनड़ गा भरणा भर दे, बसण गी कर दे टाळ॥2 ॥

--00--

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

-सम्पादक

सन्तों की दृष्टि में लोक–मंगल

सारी सृष्टि के ज्ञानावलोकन से सभी पंथों व सन्तों की कल्याणकारी भावना का पता चलता है। सन्तों के अवतरण का मुख्य उद्देश्य ही लोक–मंगल है–

तरवर, सरवर, सन्तजन, चौथा बरसे मेह।
परमार्थ के कारणे, इन चारों धारी देह॥

उक्त दोहे से स्वत: सिद्ध होता है कि हर अवतार का कारण ही लोक कल्याणकारी भावना रही है। मध्यकालीन भक्ति युग के सभी संत लोक–मंगल मार्गगामी रहे हैं। सद्गुरु जम्भेश्वर जी इन सबमें अग्रणी रहे हैं जड़, चेतन, जीव–जन्तु व पर्यावरण के प्रहरी के रूप में उन्होंने एक विशिष्ट पहचान कायम की है। पन्द्रहवीं व सोलहवीं शताब्दी के त्रस्त मानव जाति के भले के लिए गुरु जम्भेश्वर जी लोक मंगलकारी 'बिश्नोई–पंथ' का प्रचलन किया। इस चिंतन के साथ–साथ इस पंथ का मूल मंत्र ही मानव जीवन का कल्याण है। सामाजिक, आर्थिक व आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में मानव मात्र को सुखमय जीवन–यापन का सन्देश दिया है। मानव ही नहीं जंगल, जीव व पर्यावरण की रक्षा से ही लोक–मंगल सम्भव है। उन्होंने अहिंसा पर सबसे अधिक बल दिया। यथा सबद संख्या–8

चर फिर आवे सहज दुहावे, तिसका खीर हलाली।
जिसके गले करद क्यों सारो, थे पढ़ सुण रह्या खाली।

आज पर्यावरण प्रदूषण से सारा विश्व त्रस्त है, उसके निवारण का उपाय जम्भेश्वर जी ने 550 वर्ष पहले ही बता दिया था। करणी व कथनी में एकरूपता बनाये रखने के लिए वे हमेशा प्रकृति की शरण (वन) में रहे। आधुनिक सन्तों की तरह आश्रम व मंदिर नहीं बनाये। सबद संख्या–73

हरी कंकेड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा वासा।

प्राचीन भारत के सन्तों के हज़ारों साल की आयु होते हुये भी, कभी भवन व देवालय निर्माण नहीं करवाये अपितु सारी जिन्दगी वनों में रहकर ही भक्ति साधना की। वे जानते थे कि निर्माण कार्यों से जंगल, जीव–हानि होगी। आर्थिक व पर्यावरणीय नुकसान होगा। अत: आश्रम व मंदिर बनाने से भला होने वाला नहीं है। उलटे लोग मंदिरों में कोई प्रतिमा स्थापित कर मूर्ति पूजक बन जायेंगे। जिससे वैदिक सभ्यता का ह्रास होगा व बिश्नोई–पंथ का उल्लंघन होगा। अत: गुरु जम्भेश्वर जी ने जीवन पर्यन्त कोई मंदिर नहीं बनाया। ईश्वर का वास तो मन मंदिर में है। बाह्य धर्म स्थल यथार्थ से दूर है–

मठ, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, हेल मेल के साधन सारे।

मूर्ति पूजक व पाखंडियों को प्रताड़ित करते हुये अनेक सन्तों ने अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार॥
(–कबीरदास)

पाहन प्रीत फिटा कर प्राणी, गुरु बिन मुक्ति न जाई।
धवणा धूजे, पाहण पूजै, बे फरमाई खुदाई।
गुरु चेले के पाये लागे, देखो लोग अन्यायी॥
काठी कण जो रूपा रेहण, कापड़ माहीं छिपाई।
नीचा पड़–पड़ तानैं धोके, धीरा रे हरि आई॥
(–गुरु जम्भेश्वर जी)

सभी सन्तों ने परोपकार, दया, मधुर वचन, तृष्णा रहित, सन्तोषी, स्वच्छता पर जोर देकर मानव मात्र के लोक–मंगल की भावना का परिचय दिया है। जाम्भाणी साहित्य के जनक एवं जम्भेश्वर जी के लाड़ले सन्त शिरोमणी वील्होजी ने तो अपनी सारी ज़िन्दगी लोक–मंगल में लगा दी।

जम्भेश्वर जी ने प्राणी रक्षा व वृक्ष रक्षा हेतु लोगों को हमेशा प्रेरित किया। जाम्भाणी के स्तम्भ सन्त सुरजनदास जी, केसोजी, गुलाबदास जी, साहबराम जी, परमानन्द जी, उदोजी नैण आदि मध्ययुगीन सन्तों

ने हमेशा लोक-मंगल की भावनाओं से ओतप्रोत साहित्य का सृजन किया तथा भक्ति भाव द्वारा मानव समाज को सुखी बनाने में अपना सारा जीवन लगा दिया। सुरजनदास जी ने गुड़ा गाँव में वर्षा करवाकर लोकमंगल का परिचय दिया था। पिछली शताब्दी के दो सन्त सबसे बड़े परोपकारी हुए हैं। बिश्नोई पंथ के सन्त श्री चन्द्र प्रकाश जी एवं गीता प्रेस से जुड़े स्वामी रामसुखदास जी अग्रिम समाजसेवी सन्त हुए हैं, जिन्होंने यश की अनिच्छा से सब कार्य किये। हर घर में गीता व रामचरित मानस आदि साहित्य सस्ते मूल्य पर पहुँचाया।

साधु चन्दन बावना, शीतल विशाल।
निर्मल रहे तेहि परस से, निरविष हो विष व्याल॥

सन्तों के चरण स्पर्श मात्र से ही भयंकर से भयंकर विपदा भी टल सकती है। सन्त स्वभाव से ही परोपकारी एवं प्राणी मात्र के हितैषी होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सन्तों के प्रति बहुत सुन्दर भाव दोहावली में दर्शाया है, यथा-

साधु, सुधा, सुरतरु, सुमन, सुफल, सुमंगल बात।
तुलसी सीता पति भगती, सुगन सुमंगल सात॥

जाम्भाणी के सन्तों के अलावा भी भक्तिकाल में बहुत से सन्त हुए जिन्होंने क्षमा, अहिंसा पर जोरदार बल दिया है-

जीव मार जौहर करे, खांता करे बखान।
पीपा प्रत्यक्ष देख ले, थाली बीच मसाण॥

-पीपा जी महाराज

पीपाजी के अलावा कबीर जी के गुरु रामानन्द जी दक्षिण के सन्त विल्लुवर जी, धन्ना भक्त, मीरा आदि ने मानव समाज को सुखी बनाने के लिए रुढ़ियों को समाप्त कर सहज व सुखी जीवन-यापन की प्रेरणा दी है।

अभिमान को छोड़कर विवेकी, परोपकारी, तृष्णा रहित व सन्तोषी बनने के अनेकानेक उदाहरण व उपदेश दिये हैं। उनके उपदशों से प्रेरणा पाकर मानव सुखी बन सकता है। एक जाम्भाणी सन्त ने ठीक ही कहा है-

राजा भयो क्या काज सरियो, महाराज भयो काहा लाज बड़ाई।
शाह भयो काहा बात बढ़ी, पातशाह बन काहा आन पिराई॥
देव भयो तो काहा भयो, अहंमेव बढ़्यो तृष्णा अधिकाई।
ब्रह्ममुनी सन्तोष बिना, सब ओर भयो तो काहा भयो भाई॥

(सवैया)

अनेक सन्तों ने इस संसार को मिथ्या व दु:खों की खान बताते हुए सच्चा सुख सन्तों की शरण व सत्संग में बताया है। मानव अपनी इच्छाओं को सीमित कर सुखी बन सकता है।

सुरपुर, नरपुर, नागपुर, आं तीनां में सुख नाहीं।
कां सुख तरि हरि के शरण में, कां सन्तन चरणों माहीं॥

उक्त दोहे में पुर का अर्थ लोक में निहित है, अर्थात् तीनों लोकों में कहीं सुख की खोज करना व्यर्थ है। पृथ्वी लोक, पाताल लोक, व्योम लोक सब में दु:ख ही दु:ख भरा है। हे मानव! अगर सुख की प्राप्ति करनी है, तो सद्गुरु कृपा से भगवत् चिन्तन रत रहो। सन्त इस पृथ्वी पर सुखों की मंगलमूर्ति माने जाते हैं। सन्त सबके भले की कामना करते हैं, यथा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माँ कश्चिद् दुःख भाग भवेत्॥

उक्त सूक्ति में भारत के प्राचीन मनीषियों की भावना लक्षित है। इसी में विश्व बन्धुत्व की भावना का दर्शन होता है। यही सन्तों की कल्याणमयी वाणी है। यही मानव मात्र के सुमंगल की साख है-

साधु संगत जै करे, तै भव सागर तर जाय।
जीये जब तक जुगत से, मूवां सुरपुर जाय॥

-छोगाराम बिश्नोई
से.नि. अध्यापक
राजीव नगर 'सी'-80
महामंदिर के बाहर, जोधपुर
मो.: 9461595991

गुरु–मंत्र का महत्त्व

प्राचीनकाल में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके जीवन में गुरु का स्थान अवश्य था। उन्होंने पहले गुरु–दीक्षा–मंत्र ले करके गुरु बनाए थे। उसके बाद उनकी आज्ञानुसार अपना लक्ष्य प्राप्त करने में वे सफल हुए थे। यथा–भगवान श्रीराम के गुरु वशिष्ठ मुनि थे, भगवान श्री कृष्ण के गुरु संदीपनी ऋषि थे। संत ज्ञानेश्वर के गुरु निवृतिनाथ, स्वामी विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस, राजा जनक के अष्टावक्र जी थे। गुरु के बिना सच्ची समझ, परमात्म–अनुभूति, आनंद, माधुर्य, शांति एवं समता का अनुभव नहीं होता है। संत सहजोबाई ने कहा है–

सहजो कारज जगत के, गुरु बिन पूरे नाहिं।
हरि जो गुरु बिन क्यों मिले, समझ देख मन माहिं।

सत्संग व जागरणों में गायक ये दोहे बोलते हैं–

जिसने सतगुरु किया नहीं, ताका हिरदा है मलीन।
जन्म–जन्म के बीच में, रहे दीन को दीन॥
नगुरा माणस एक मत मिलो, पापी मिलो हजार।
एक नगुरा रे शीश पर, लख पापियन को भार॥

प्रत्येक समाज का मूलाधार संस्कार है, संस्करों का मूलाधार गुरु–दीक्षा (सुगरा) संस्कार हैं। किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में धार्मिक अनुष्ठान साधना व आध्यात्मिक कार्यों को सम्पन्न कराने का वही अधिकारी है, जो गुरु–दीक्षा–मंत्र लेकर दीक्षित (सुगरा) है। गुरु किये बिना वह कोई शुभ कर्म यज्ञ, दान–पुण्य आदि करता है, तो उसके बदले में उसे किसी शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सबद संख्या 42 में कहा है–

निश्चय कायूं बायूं होयसी जे गुरु बिन खेल पसारी।

हे मनुष्य! यदि तुम अपने इस जीवन में गुरु दीक्षा से हीन होकर गुरु–आज्ञा के बिना मनमुखी होकर अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु पाखंड करके लोगों को दिग्भ्रमित करने के कार्य करते रहोगे, तो आप निश्चय ही छिन्न–भिन्न हो जाओगे। आपका सर्वनाश हो जायेगा। श्री जाम्भोजी ने मनमुखी व गुरुमुखी के सम्बन्ध में सबद संख्या 30 में कहा है–

मनमुख दान ज्यूं दीन्हों करणे, आवागवण ज्यूं आइये।
गुरुमुख दान ज्यूं दीन्हो विदरे, सुर की सभा समाइये।

हे शिष्य लोगों! इस संसार में कर्ण जैसा दानी नहीं हुआ, फिर भी मरने के बाद जन्म–मरण रूपी आवागमन के चक्कर में पड़ गया था, क्योंकि उसने गुरु धारण किये बिना अपने जीवन काल में मनमुखी होकर दान दिया था। इसलिए वह बैकुण्ठ धाम से वंचित रह गया जबकि विदुर ने गुरु धारण करके गुरु–अनुसार दान दिया, तो मरने के बाद सीधा बैकुण्ठ धाम में देवताओं की सभा में सुशोभित हुआ। जन्म–मरण–रूपी आवागमन के चक्कर से मुक्त हो गया था।

सुगरा होने से क्या लाभ है और नुगरा होने से क्या हानि है, इसके सम्बन्ध में श्री जाम्भोजी ने सबद संख्या 73 में कहा है–

सुगरा होयसी सुरगे जायसी, नगुरा रहया निरासु।
गुरु बिन मुक्ति न जाई।

जो व्यक्ति गुरु–दीक्षा–मंत्र लेकर सुगरा हो गया और गुरु–आज्ञा–अनुसार सदाचरण करते हुए अपना जीवन जीता है, वह मृत्यु होने के बाद सीधे स्वर्ग में जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति गुरु–दीक्षा–मंत्र से हीन नुगरा रह करके जीवन जीता है, चाहे उसने कितने भी धार्मिक–आध्यात्मिक कार्य किये हों, उसे स्वर्ग प्राप्ति से वंचित रहते हुए निराशा ही हाथ लगेगी। गुरु के बिना उसकी मुक्ति नहीं हो सकेगी। नुगरे व्यक्ति का जीवन कैसा होता है, इसके सम्बन्ध में श्री जाम्भोजी ने सबद संख्या 95 में कहा है–

नुगरा के मन भयो अंधेरो, सुगरा सूर उगाणों।

हे मनुष्यों! जगत् में जो व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बनाने हेतु प्रयास न करके कुतर्कों और वाद–विवाद में पड़ा जीवन जीता है और गुरु की शरण में जाकर ज्ञान नहीं लेता है, उस नुगरे व्यक्ति का जीवन अज्ञानांधकार में ही बीतता है। जबकि जो व्यक्ति गुरु की शरण में जा करके गुरु–दीक्षा–मंत्र लेता है और गुरु आज्ञा अनुसार चलता है उसका जीवन ज्ञानरूपी दीप के

द्वारा इस जगत् में प्रकाशमान हो जाता है। भगवान जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ की स्थापना वि.सं. 1542 में की थी। इस पंथ के सही संचालन हेतु अपने अनुयायियों का युक्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करके मोक्ष की प्राप्ति कर सके इस बाबत बिश्नोई पंथ के लोगों को सदाचारी साधु से सुगरा मंत्र लेकर दीक्षित होने की आज्ञा दी थी। प्रत्येक बिश्नोई को सुगरा-संस्कार जब उसकी संतान 10 वर्ष पूर्ण करले, तब योग्य साधु को घर बुलवा करके हवन-पाहल करवा करके सुगरा करवाना चाहिए। श्री जाम्भोजी ने सुगरा-संस्कार हेतु निम्नलिखित गुरु दीक्षा मंत्र बताया-

ओ३म सबद गुरु सुरत चेला, पांच तत्व में रहे अकेला।
सहजे योगी शून्य में वास, पांच तत्व में लियो प्रकाश॥
ना मेरे माई ना मेरे बाप, अलख निरंजन आपे ही आप।
गंगा यमुना बहै सरस्वती, कोई-कोई न्हावे बिरला यती॥
तारक मंत्र पार गिराय, गुरु बतायो निश्चय नाम।
जो को सुमरै उतरै पार, बहुरि न आवै मैली धार॥

यह तारने वाला मंत्र श्री जाम्भोजी ने हमें दिया था। गुरु आज्ञानुसार इस मंत्र का जप करने से भवसागर से पार हो जाते हैं। यह मोक्षदायी मंत्र है। यह मंत्र सुगरे व्यक्ति का रक्षक है। इस मंत्र का जप करके कोई व्यक्ति अपने घर से किसी कार्य हेतु निकलता है, तो उसको सफलता मिलती है। स्कूल या कॉलेज परीक्षा में बैठने के लिए प्रवेश-पत्र की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार शुभ कार्यों को करने व बैकुण्ठ धाम में जाने हेतु सुगरा-मंत्र ज़रूरी है।

मंत्र-दीक्षा लेना यानि सुगरा होने का मतलब है, आत्मा-परमात्मा है, उससे जुड़ जाना। शिष्य कहलाने हेतु मंत्र लेना अलग बात है। जिस दिन से हम गुरु मंत्र लेते हैं, उस दिन से मंत्र के द्वारा, दृष्टि के द्वारा आत्म देव में जगे हुए गुरुदेव की हाज़िरी हमारे हृदय में हो जाती है। गुरु दीक्षा को आदमी का दोबारा जन्म माना जाता है। पहले माता-पिता के शरीर से इस स्थूल शरीर का जन्म हुआ, फिर गुरुओं की कृपा से हम लोगों का मंत्र दीक्षा से जो जन्म हुआ है, यह आध्यात्मिक जन्म हुआ है। जैसे एक प्रार्थना में कहा है-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देव।

ऐसे गुरुओं से मंत्र दीक्षा मिल जाये और साधक शिष्य उनके बताए नियम मार्ग के अनुसार चल दे, तो इसी जन्म में उसे परमात्मा से साक्षात्कार हो जायेगा। कोई गृहस्थ यदि मंत्र दीक्षा लेकर गुरु के बताये उपदेशों पर चलता है, परन्तु पूरा नहीं चल पाया, तो भी उसे नरक में नहीं जाना पड़ेगा। नरक उसके लिए गुरु मंत्र लेने से ख़त्म हो गया। थोड़ी बहुत उसने गुरु मंत्र की साधना की है, तो वह स्वर्ग में जायेगा। यदि उसे गुरु मंत्र की बढ़िया समझ और साधना है, तो ऊँचे लोकों में जायेगा। किसी शिष्य ने गुरु से ब्रह्मज्ञान का श्रवण-मनन किया है, तो मरने के बाद ब्रह्मलोक में जायेगा। ब्रह्मलोक में ब्रह्मा जी उसे उपदेश देंगे, तो वह आवागमन के चक्र से मुक्त हो जायेगा। यह गुरु मंत्र का महत्त्व है। अतः गुरु मंत्र को साधारण न समझें। यह आपको परमात्मदेव में, परमात्म सुख में प्रतिष्ठित कर देगा। श्री जाम्भोजी ने सबद संख्या 70 में कहा है-

कोई गुरु कर ज्ञानी तोड़त मोहा तेरो मन रखवालो रे भाई।

अरे नुगरे लोगो! यदि तुम इन सांसारिक विघ्न-बाधाओं से बचना चाहते हो, तो किसी ज्ञानी (गुरु) की शरण में जा करके गुरु दीक्षा मंत्र ग्रहण करोगे, तो वह गुरु अपने ज्ञान के द्वारा कृपा दृष्टि करके तुम्हारे मोह के बंधनों को तोड़ देगा। तब तुम्हारी जीवन रूपी खेती को चरने चाला चंचल मन भी इसी खेती का रक्षक हो जायेगा।

संदर्भ सूचि-

1. सबदवाणी दर्शन - स्वामी कृष्णानंद आचार्य
2. सबदवाणी सरलार्थ - स्वामी भागीरथ दास शास्त्री
3. अमर ज्योति मासिक पत्रिका, अंक सात, जुलाई 2013
4. जम्भ ज्योति मासिक पत्रिका, अंक आठ, अगस्त 2013
5. ऋषि प्रसाद, मासिक पत्रिका, अंक नौ, सितम्बर 2012

-बुधाराम जाणी
ग्रा.पो.-खारा, तह. फलोदी
जिला जोधपुर (राज.)

बाल कविताएँ

मिस्कॉल

छेनू था हिरणी
का बच्चा,
पिंकू उसका
यार था।
दोनों मिल
शोर मचाते,
ऐसा उनमें
प्यार था।
जब वो मक्खन
रोटी देता,
खा लेता था,
चाव से,
पिंकू उसके
कान खींचता
वो नाक रगड़ता
भाव से।
पिंकू कहता
सुन मेरे छेनू!
लाइफ तेरी में
अगर कभी
पड़ जाए कोई
झोल, (संकट)
मैं दौड़ा-दौड़ा
आ जाऊँगा
तू कर देना
मिस्कॉल।

बंद करो ये धंधे

हासम-कासम दो भाई थे,
काम था उनका दर्जी।
बिश्नोई धर्म स्वीकार किया जब,
छोड़ी थी मनमर्जी।
इक दिन पहुँची चुगली
दरबार सिकन्दर के,
राजा ने आदेश दिया
दोनों जेल के अंदर थे।
भूख, प्यास से तड़प रहे थे,
पर छुआ नहीं था मांस,
राजा की ये देख-देखकर
फूल रही थी सांस।
मौत को निकट देखकर,
किया जम्भ को याद,
विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी का
गूंजा दिल्ली में नाद।
टूटी बेड़ी, ताले टूटे
पहरी हो गए अंधे,
जम्भ देव ने कहा
सिकन्दर!
बंद करो ये धंधे।

होम

नन्हे हाथों
होम किया,
फिर घर से निकला
भूप।
तन मन में
बसाया विष्णु को
निखर गया तब रूप।
पढ़ने में वो
तेज घना था,
मुख पर रहती लाली।
भजन आरती
गाता विष्णु की
खूब बजाता ताली।

रीत

पानी पीती छानकर
नन्ही बेटी गीत।
नखराली थी
जन्म जात और
जाम्भोजी से प्रीत।
समराथल वो
जाती रहती,
गर्मी हो या सीत।
सुबह-सुबह ही
नहा लेती वो
मानी धर्म की
रीत।

साभार- जाम्भोजी की चिड़कली
(कवि सुरेन्द्र सुन्दरम्, श्रीगंगानगर)

जलवायु परिवर्तन और कृषि

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जलवायु परिवर्तन विकसित और विकासशील देशों के बीच बहस का विषय बन गया है। रोजमर्रा के संघर्षों से अपनी आजीविका अर्जित करने वाले लोगों के लिए यह एक मात्र खबर या शैक्षणिक विषय वस्तु हो सकती है लेकिन सच्चाई यह है कि इस समस्या का, जो हवा, पानी, कृषि, भोजन, स्वास्थ्य, आजीविका और आवास आदि पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं, हम सभी के जीवन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

बढ़ता औसत तापमान, मौसम में गर्मी और अन्य जलवायु संबंधी परिस्थितियां किसी भी विशिष्ट समुदायों या क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं। अगर तटीय या द्वीप क्षेत्रों के लोग समुद्र के स्तर की वृद्धि से प्रभावित हो रहे हैं तो किसान असामान्य मानसून और पानी संकट से पीड़ित हैं, तटीय क्षेत्र के निवासियों ने विपत्तिपूर्ण तूफानों की मार सही है, कई क्षेत्रों के लोग सूखा और बाढ़ की स्थिति से पीड़ित हैं, असामान्य मौसम से संबंधित अजीब बीमारियों का जन्म हो रहा है और जिन लोगों ने विनाशकारी बाढ़ में अपने घर-बार गवां दिए हैं वे अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित होने के लिए मजबूर हैं।

दरअसल पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना कर रही है। इससे कृषि उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अधिकांश खाद्य फसल एक निश्चित तापमान सीमा के भीतर उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए लगभग 15 डिग्री सेल्सियस में गेहूं, 20 डिग्री सेल्सियस पर मक्का और 25 डिग्री सेल्सियस पर चावल। इसलिए जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में कोई भी परिवर्तन अनाज की मात्रा और साथ ही फसलों की गुणवत्ता के लिए खतरा पैदा करता है।

जलवायु परिवर्तन का कृषि पर प्रभाव

जलवायु परिवर्तन का फसलों पर प्रभाव: कृषि क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन का संभावित प्रभाव दिखाई देता है। जलवायु परिवर्तन न केवल फसलों के उत्पादन को प्रभावित करेगा बल्कि उनकी गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालेगा। पोषक तत्वों और प्रोटीन का अभाव अनाज में पाया जाएगा जिसके कारण संतुलित आहार लेने के बाद भी मनुष्यों के स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा और ऐसी कमी के कारण अन्य कृत्रिम विकल्पों से इसकी भरपाई की जाएगी। तटीय क्षेत्रों में तापमान में वृद्धि के कारण अधिकांश फसलों का उत्पादन कम हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन से मुख्य रूप से दो प्रकार के प्रभाव होंगे- एक क्षेत्र आधारित और दूसरा फसल आधारित। इसलिए विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न फसलों पर इसका अलग-अलग प्रभाव होगा।

गेहूं और धान हमारे देश की मुख्य खाद्य फसलें हैं। उनके उत्पादन को जलवायु परिवर्तन के कारण कई नुकसान भुगतने होंगे जो निम्नानुसार है-

गेहूं उत्पादन: अध्ययनों से पता चला है कि अगर तापमान लगभग 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है तो ज्यादातर स्थानों में गेहूं का उत्पादन कम हो जाएगा। इसका प्रभाव वहां कम पड़ेगा जहां गेहूं की उत्पादकता उच्च है (उत्तर भारत में) हालांकि उन क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन का अधिक प्रभाव पड़ेगा जहां कम उत्पादकता है।

यदि तापमान 1 सेंटीग्रेड बढ़ता है तो गेहूं का उत्पादन 4-5 मिलियन टन घट जाएगा। अगर किसान ने गेहूं की बुवाई समय से करता है तो उत्पादन में गिरावट 1-2 टन तक कम हो सकती है।

धान उत्पादन : धान की खेती का हमारे देश की कुल फसल उत्पादन का 42.5% हिस्सा है। धान का उत्पादन तापमान वृद्धि के साथ गिरना शुरू होगा। अनुमान लगाया जाता है कि तापमान 2 सेंटीग्रेड बढ़ने से धान का उत्पादन 0.75 टन प्रति हैक्टेयर कम हो जाएगा।

धान के उत्पादन से देश का पूर्वी भाग और अधिक

प्रभावित होगा क्योंकि अनाज की मात्रा कम हो जाएगी। धान एक वर्षा आधारित फसल है इसलिए जलवायु परिवर्तन के साथ यदि बाढ़ और सूखे की स्थिति बढ़ती है तो इस फसल का उत्पादन गेहूं की तुलना में अधिक प्रभावित होगा।

पशुओं पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव : फसलों और पेड़ों के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन का प्रभाव जानवरों पर भी देखा जाता है। इसके संभावित प्रभाव हो सकते हैं-

तापमान में वृद्धि जानवरों के विकास, स्वास्थ्य और उत्पादन को प्रभावित करती है। गर्मी के कारण उनमें तनाव बढ़ जाता है जिससे उनका उत्पादन कम हो जाता है और रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। यह अनुमान है कि तापमान में वृद्धि के कारण 2020 तक दूध उत्पादन में 1.6 लाख टन तक और 2050 तक 15 मिलियन टन तक की गिरावट देखी जा सकती है। अगले कुछ सालों में वर्षा की मात्रा, तीव्रता और वितरण पद्धतियों में परिवर्तन के कारण गर्भधारण की दर बहुत कम हो सकती है, तापमान और गर्म तरंगों की तीव्रता बढ़ सकती है, पशुओं का जीवन चक्र संवेदनशील चरणों में प्रभावित हो सकता है।

सबसे खराब गिरावट हाइब्रिड गायों (0.63%) में, भैंसों (0.50%) और घरेलू नस्लों (0.40%) में होगी। हाइब्रिड नस्लों की प्रजाति गर्मी के प्रति कम सहिष्णु है इसलिए उनकी प्रजनन क्षमता और दूध उत्पादन सबसे अधिक प्रभावित होगी जबकि स्वदेशी नस्लों में जलवायु परिवर्तन का असर कम दिखाई देगा।

गर्मी का तनाव अंडाणु की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है और गर्मी से प्रभावित जानवरों के तापमान में वृद्धि भ्रूण के विकास को कम करती है जिसके परिणामस्वरूप खराब भ्रूण आरोपण और भ्रूण की मृत्यु दर में वृद्धि होती है।

गर्मी और बारिश के वितरण में होने वाले परिवर्तनों से एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर, रक्तस्रावी सेप्टेसिमिया और वेक्टर-संबंधी रोग हो सकते हैं, जो नमी की उपस्थिति में पनपते हैं।

तापमान में बदलाव, वर्षा, सूखा, तूफान और बाढ़ में परिवर्तन मछली के जीवन पर काफी बुरा असर डाल सकता है। कुछ वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियां इन चरम स्थितियों को बर्दाश्त नहीं कर सकती हैं।

जल संसाधन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव : पृथ्वी का लगभग 71% पानी से ढंका हुआ है जिसमें से 97% पानी महासागरों में पाया जाता है। मानव उपभोग के लिए केवल 136 हजार घन मीटर पानी शेष है। पानी तीन रूपों में पाया जाता है- तरल जो महासागरों, नदियों, तालाबों और भूमिगत जल में पाया जाता है, ठोस - जो बर्फ के रूप में पाया जाता है और गैस - जो वायु-वाष्पन द्वारा वायुमंडल में मौजूद है। दुनिया में पानी की खपत हर 20 साल में दोगुनी हो जाती है जबकि पृथ्वी पर उपलब्ध पानी की मात्रा सीमित है। शहरी इलाकों में कृषि और उद्योगों में बहुत ज्यादा पानी व्यर्थ हो जाता है। ऐसा अनुमान है कि अगर ठीक से व्यवस्था की जाए तो पानी को 40 से 50% तक बचाया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को पानी की आपूर्ति की गंभीर समस्या होगी और बाढ़ तथा सूखे की आवृत्ति बढ़ जाएगी। अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में लंबे समय तक शुष्क मौसम और फसल उत्पादन की विफलता में वृद्धि होगी। इतना ही नहीं सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता का खतरा बड़ी नदियों में पानी की तीव्रता, लवणता, बाढ़, शहरी और औद्योगिक प्रदूषण में वृद्धि के कारण महसूस किया जा सकता है।

भूजल का महत्व हमारे जीवन में सबसे ज्यादा है। पीने के अलावा यह पानी कृषि और साथ ही उद्योगों के लिए उपयोग किया जाता है। गांवों में पानी के पारंपरिक स्रोत लगभग समाप्त हो रहे हैं। गांव के तालाब पानी के स्तर को अच्छी तरह से बनाए रखने में उपयोगी थे। किसान अपने खेतों में अधिक से अधिक वर्षा का पानी जमा करते थे ताकि भूमि की आर्द्रता और उर्वरता बनी रहे लेकिन अब कम कीमतों पर ट्यूबवेलों और बिजली की उपलब्धता के चलते किसानों ने अपने क्षेत्रों में पानी का संरक्षण करना बंद कर दिया है।

जनसंख्या में वृद्धि के साथ यह स्वाभाविक है कि पानी की मांग में वृद्धि हुई है लेकिन जल प्रदूषण और समुचित जल प्रबंधन की कमी के चलते पानी आज एक समस्या बनने लगा है। जलवायु परिवर्तन से पूरे विश्व में पीने के पानी की कमी में वृद्धि होगी।

मिट्टी पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव : कृषि के अन्य घटकों की तरह जलवायु परिवर्तन से मिट्टी पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा है। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के कारण मिट्टी पहले ही प्रदूषित हो रही थी। अब तापमान में वृद्धि

के कारण मिट्टी की नमी और दक्षता भी प्रभावित होगी। मिट्टी में लवणता में वृद्धि होगी और जैव विविधता में कमी आएगी। भूजल के घटते स्तर से जमीन की उर्वरता भी प्रभावित होगी। बाढ़ जैसी दुर्घटनाओं के कारण मिट्टी का क्षरण अधिक होगा लेकिन सूखे की वजह से बंजरपन बढ़ेगा। वृक्षारोपण और जैव-विविधता की कमी में गिरावट के कारण उर्वरित मिट्टी की गिरावट क्षेत्र को बंजर बनाने में मदद करेगी।

रोगों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव : जलवायु परिवर्तन कीटनाशकों के विकास और रोगों पर विपरीत प्रभाव डालता है। तापमान, नमी और वायुमंडलीय गैसों के कारण पौधों, फंगस और अन्य रोगजनकों के प्रजनन और कीड़ों तथा उनके प्राकृतिक दुश्मनों के अंतर-संबंधों में परिवर्तन में वृद्धि होगी। कीड़ों की उर्वरता बढ़ाने में गर्म जलवायु उपयोगी है। वसंत ऋतु में गर्मी और शरद ऋतु के मौसम में कई कीटनाशकों के प्रजनन से जीवन चक्र पूरा होता है सर्दियों में कहीं छिपकर वे लार्वा को जिंदा रखते हैं। वायु की दिशा में परिवर्तन बैक्टीरिया, फंगस और साथ ही वायु में कीटाणुओं की संख्या में वृद्धि करता है। उन्हें नियंत्रित करने के लिए अधिक मात्रा में कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है जो अन्य रोगों को जन्म देता है। इसी तरह जानवरों में रोग बढ़ने लगते हैं।

एक नजर में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :

- 2100 तक फसलों की उत्पादकता 10-40% कम हो जाएगी।
- रबी फसलें अधिक क्षतिग्रस्त हो जाएंगी। अगर तापमान एक सेंटीग्रेड से बढ़ता है तो अनाज उत्पादन में 4-5 मिलियन टन की कमी आएगी।
- सूखे और बाढ़ में वृद्धि के कारण फसलों के उत्पादन में अनिश्चितता होगी।
- फसल की बुवाई के क्षेत्र में भी बदलाव आएगा। कुछ नए स्थानों पर फसलों का उत्पादन किया जाएगा।
- दुनिया भर के खाद्य व्यापार में असंतुलन हो जाएगा।
- मनुष्य के लिए पानी, पशु और ऊर्जा से संबंधित जरूरतें बढ़ जाएँगी खासकर दूध उत्पादन के लिए।
- समुद्र और नदियों के तापमान में वृद्धि के कारण मछलियों और जलीय पशुओं की उर्वरता और उपलब्धता कम हो जाएगी।
- सूक्ष्म जीवों और कीड़ों पर इसका प्रभाव पड़ेगा। यदि कीड़ों की संख्या बढ़ जाती है तो रोगाणु नष्ट हो जायेंगे।
- बारिश से पीड़ित क्षेत्रों की फसलों को अधिक नुकसान होगा क्योंकि सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता भी कम हो जाएगी।

निष्कर्ष : कई फसलें जो कम पानी और रासायनिक उर्वरकों के बिना उगाई जाती थी वे समाप्त हो गई और उन्हें नई फसलों के द्वारा प्रतिस्थापित किया गया जिन्हें बड़ी मात्रा में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, संशोधित बीजों और सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके साथ खेती की लागत में वृद्धि हुई है और खेती की पद्धति भी बदल गई है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव ग्रामीण खेती समुदाय के जीवन और जीवन शैली के स्तर पर देखा जा सकता है। किसानों को दूसरे व्यवसायों की ओर बढ़ने के लिए मजबूर किया गया है क्योंकि खेती में नुकसान उठाना पड़ता है। खेत में पैदावार में वृद्धि हुई लेकिन लागत कई बार अधिक हो गई जिसके परिणामस्वरूप अधिशेष का संकट उत्पन्न हो गया। गर्मी, सर्दी और बरसात के मौसम में फेरबदल की वजह से फसलों, सिंचाई और कटाई के मौसम का चक्र बदल गया और प्रारंभिक खेती के दबाव के कारण पशुओं की तुलना में मोटर वाहनों पर निर्भरता अधिक हो गई है।

कृषि पर जलवायु परिवर्तन के तत्काल और दूरगामी प्रभावों का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें इस क्षेत्र में दो चीजें तुरंत करनी चाहिए एक यह पता करना होगा कि जलवायु परिवर्तन की वजह से कृषि चक्र पर क्या प्रभाव पड़ रहा है दूसरा, क्या हम कुछ वैकल्पिक फसलों को बढ़ावा देकर इस परिवर्तन की क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। हमें ऐसी फसलों की किस्मों को विकसित करना चाहिए जो जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने में सक्षम हो। जो अधिक गर्मी और अधिक ठंड को सहन करने में सक्षम हो और फसलों का विकास कर सके। उचित कृषि पद्धतियों को अपनाने के कारण जलवायु परिवर्तन के असर को कम किया जा सकता है। इसके लिए सरकार, कृषि विभागों और दुनिया भर के किसानों को साथ मिलकर काम करना होगा।

-मृगेन्द्र वशिष्ठ
बढ़वाली ढाणी, हिसार

मार्मिक लघुकथा

नालायक

देर रात अचानक ही पिता जी की तबियत बिगड़ गयी। आहट पाते ही उनका नालायक बेटा उनके सामने था।

माँ ड्राइवर बुलाने की बात कह रही थी, पर उसने सोचा अब इतनी रात को इतना जल्दी ड्राइवर कहाँ आ पायेगा ?

यह कहते हुए उसने सहज जिद् और अपने मजबूत कंधों के सहारे बाऊजी को कार में बिठाया और तेज़ी से अस्पताल की ओर भागा।

बाउजी दर्द से कराहने के साथ ही उसे डांट भी रहे थे- 'धीरे चला नालायक, एक काम जो इससे ठीक से हो जाए।'

नालायक बोला- 'आप ज्यादा बातें ना करें बाउजी, बस तेज़ साँसें लेते रहिये, हम अस्पताल पहुँचने वाले हैं।'

अस्पताल पहुँचकर उन्हें डॉक्टरों की निगरानी में सौंप, वो बाहर चहलकदमी करने लगा, बचपन से आज तक अपने लिए वो नालायक ही सुनते आया था। उसने भी कहीं न कहीं अपने मन में यह स्वीकार कर लिया था की उसका नाम ही शायद नालायक ही है। तभी तो स्कूल के समय से ही घर के लगभग सब लोग कहते थे कि नालायक फिर से फेल हो गया। नालायक को अपने यहाँ कोई चपरासी भी ना रखे। कोई बेवकूफ ही इस नालायक को अपनी बेटी देगा। शादी होने के बाद भी वक्त बेवक्त सब कहते रहते हैं कि इस बेचारी के भाग्य फूटे थे जो इस नालायक के पल्ले पड़ गयी।

हाँ, बस एक माँ ही हैं जिसने उसके असल नाम को अब तक जीवित रखा है, पर आज अगर उसके बाउजी को कुछ हो गया तो शायद वे भी..। इस ख्याल के आते ही उसकी आँखे छलक गयी और वो उनके लिये अस्पताल में बने एक मंदिर में प्रार्थना में डूब गया। प्रार्थना में शक्ति थी या समस्या मामूली, डॉक्टरों ने सुबह-सुबह ही बाऊजी को घर जाने की अनुमति दे दी।

घर लौटकर उनके कमरे में छोड़ते हुए बाऊजी एक बार फिर चीखे- 'छोड़ नालायक! तुझे तो लगा होगा कि बूढ़ा अब लौटेगा ही नहीं।'

उदास वो उस कमरे से निकला, तो माँ से अब रहा नहीं गया। 'इतना सब तो करता है, बावजूद इसके आपके लिये वो नालायक ही है।' विवेक और विशाल दोनों अभी तक सोये हुए हैं उन्हें तो अंदाजा तक नहीं है कि रात को क्या हुआ होगा ? बहुओं ने भी शायद उन्हें बताना उचित नहीं समझा होगा।

यह बिना आवाज दिए ही आ गया और किसी को भी परेशान नहीं किया।

भगवान न करे कल को कुछ अनहोनी हो जाती तो..... और आप हैं कि..... ? उसे शर्मिंदा करने और डांटने का एक भी मौका नहीं छोड़ते। कहते-कहते माँ रोने लगी थी। इस बार बाऊजी ने आश्चर्य भरी नजरों से उनकी ओर देखा और फिर नज़रें नीची कर लीं।

माँ रोते-रोते बोल रही थी। अरे, क्या कमी है हमारे बेटे में ?

हाँ मानती हूँ पढ़ाई में थोड़ा कमजोर था.... तो क्या ? क्या सभी होशियार ही होते हैं ? वो अपना परिवार, हम दोनों को, घर-मकान, पुश्तैनी कारोबार, रिश्तेदार और रिश्तेदारी सब कुछ तो बखूबी सम्भाल रहा है। जबकि बाकी दोनों जिन्हें आप लायक समझते हैं वो बेटे सिर्फ अपने बीबी और बच्चों के अलावा ज्यादा से ज्यादा अपने ससुराल का ध्यान रखते हैं।

कभी पूछा आपसे कि आपकी तबियत कैसी है ? और आप हैं कि....

बाऊजी बोले- सरला तुम भी मेरी भावना नहीं समझ पाई ? मेरे शब्द ही पकड़े न...

क्या तुझे भी यही लगता है कि इतना सब होने के

बाद भी इसे बेटा कह के नहीं बुला पाने का, गले से नहीं लगा पाने का दु:ख तो मुझे नहीं है ? क्या मेरा दिल पत्थर का है ?

हाँ, सरला सच कहूँ, दु:ख तो मुझे भी होता ही है, पर उससे भी अधिक डर लगता है कि कहीं ये भी उनकी ही तरह 'लायक' ना बन जाये। इसलिए मैं इसे इसकी पूर्णता: का अहसास इसे अपने जीते जी तो कभी नहीं होने दूंगा....

माँ चौंक गई .....

ये क्या कह रहे हैं आप ?

हाँ सरला... यही सच है। अब तुम चाहो तो इसे मेरा स्वार्थ ही कह लो। ' कहते हुए उन्होंने रोते हुए नजरें नीची किए हुए अपने हाथ माँ की तरफ जोड़ दिये जिसे माँ ने झट से अपनी हथेलियों में भर लिया और कहा अरे... अरे... ये आप क्या कर रहे हैं ? मुझे क्यों पाप का भागी बना रहे हैं। मेरी ही गलती है, मैं आपको इतने वर्षों में भी पूरी तरह नहीं समझ पाई.....

और दूसरी ओर दरवाज़े पर वह नालायक खड़ा-खड़ा यह सारी बातचीत सुन रहा था वो भी आंसुओं में तरबतर हो गया था। उसके मन में आया कि दौड़कर अपने बाऊजी के गले से लग जाए, पर ऐसा करते ही उसके बाऊजी झेंप जाते। यह सोचकर वो अपने कमरे की ओर दौड़ गया। कमरे तक पहुँचा भी नहीं था कि बाऊजी की आवाज कानों में पड़ी।

अरे नालायक..... वो दवाइयाँ कहा रख दी ?

गाड़ी में ही छोड़ दी क्या ? कितना भी समझा दो इससे एक काम भी ठीक से नहीं होता ....

नालायक झटपट आँसू पौछते हुए गाड़ी से दवाइयाँ निकाल कर बाऊजी के कमरे की तरफ दौड़ गया।

संकलनकर्ता-

मदन गोपाल (वरिष्ठ अध्यापक)

सुपुत्र श्री किशनाराम नैण

गांव केलनसर (जोधपुर)

एक अनूठी पहल .....

12 मार्च सोमवार को गांव चौधरीवाली (हिसार) में श्री भगवान दास जी मांजू के घर आंगन में भव्य शादी समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिवार की तरफ से 'शिक्षित बेटी-शिक्षित भारत सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत गांव की उन चुनिंदा लड़कियों को सम्मानित किया गया जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपने कदम आगे बढ़ाए हैं।

मुख्य अतिथि के तौर पर गवर्नमेंट कॉलेज हिसार से श्रीमती (डॉ.) कमलेश जी ख्यालिया ने कार्यक्रम में शिरकत की।

कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ. श्री कमलेश जी ख्यालिया ने कहा कि वास्तव में ही इस परिवार ने शादी जैसे शुभ अवसर पर गांव की पढ़ी-लिखी बेटियों को सम्मानित करके लोगों में सामाजिक जागरूकता फैलाने की दिशा में एक बहुत अच्छा

कदम उठाया है, जिसे आने वाले समय में याद किया जाएगा।

आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह शायद अपने आप में पहला अवसर है जब किसी शादी समारोह में सामाजिक जागरूकता लाने के उद्देश्य से शिक्षित लड़कियों को सम्मानित किया गया हो।

-**रमेश बिश्नोई,** चौधरीवाली

कैरियर

फूड प्रोडक्शन मैनेजर की बढ़ रही है मांग

एक फूड प्रोडक्शन मैनेजर विशेष भोजन तैयार करने के सभी पहलुओं में कुशल होता है। ऐसे में वो युवा जिनकी दिलचस्पी कैटरिंग, व्यंजन बनाने, विशिष्ट डिश तैयार करने तथा इंडियन, कांटिनेंटल, चाइनीज तथा अन्य इंटरनेशनल पकवान बनाने में है उनके लिए फूड प्रोडक्शन का प्रोफेशन निश्चित रूप से एक बेहतरीन कैरियर विकल्प सिद्ध हो सकता है।

पिछले कुछ समय में जिस तरह से होटल एंड हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में ग्रोथ हुई है, उससे होटल इंडस्ट्री के पेशेवरों की काफी डिमांड हुई है। इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के अनुसार 2014-2015 में भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों में करीब साढ़े सात प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसी ही सकारात्मक उम्मीद की किरण 2016 में भी नजर आई। बड़े शहरों के बाद अब छोटे शहरों में भी रेस्टोरेंट खुले हैं। ऐसे में इस इंडस्ट्री में हुनरमंद प्रोफेशनल्स की मांग भी बढ़ी है। होटल इंडस्ट्री से जुड़ा एक खास कैरियर फूड प्रोडक्शन का है। अगर आपको खाना बनाने का शौक है और आपको किचन में रहना अच्छा लगता है, तो आपके लिए फूड प्रोडक्शन मैनेजर बनना बेहतरीन रहेगा।

काम का स्वरूप : दि होटल स्कूल के डायरेक्टर अनिल बटूट के मुताबित फूड प्रोडक्शन का काम किसी भी रेस्तरां, होटल, फास्ट फूड ज्वाइंट या किसी भी फूड स्टॉल पर खाना बनाना होता है। फूड प्रोडक्शन मैनेजर की भूमिका यहीं खत्म नहीं हो जाती, मेन्यू प्लान करना, सामान मंगाना, तैयारी की सुपरविजन करना, किचन के स्टाफ को निर्देश देना भी उसकी जिम्मेदारियों में शामिल होता है। शेफ के रूप में अच्छी क्वालिटी का स्वादिष्ट खाना तैयार करना उसका धर्म है, क्योंकि उसी के आधार पर ग्राहक आएंगे और फूड बिजनेस चलेगा। फूड प्रोडक्शन मैनेजर को अलग-अलग किस्म के व्यंजनों और उन्हें तैयार करने की विधि के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

कोर्स एवं योग्यता : एलबीआईआईएचएम के डायरेक्टर कमल कुमार के मुताबित इस पेशे को मिलने वाले मान व पैसे को देखते हुए ऐसे लोग इसे बतौर कैरियर चुन रहे हैं जिन्हें स्वाद की दुनिया पसंद है। जो इस कला को सिखाने व बेहतर बनाने में मदद करते हैं। उनमें दाखिला लेने के लिए अभ्यर्थी को दसवीं या बारहवीं कक्षा में उत्तीर्ण होना चाहिए। दसवीं पास अभ्यार्थी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में और 12वीं पास अभ्यर्थी डिग्री पाठ्यक्रम में दाखिला ले सकते हैं। इसके अलावा, उनमें पाक कला के प्रति रूझान होना चाहिए। उनमें इस बात की ललक होनी चाहिए कि कैसे नए-नए व्यंजन बनाए जाएं और स्वादिष्ट बनाए जाएं कि खाने वाले को पसंद आएं। खाद्य पदार्थों की तासीर का पता होना चाहिए ताकि स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य को भी सहेजा जा सके।

रोजगार के अवसर : फूड क्राफ्ट, फूड प्रोडक्शन, फूड एंड बेवरेजेज सर्विस या बेरी कंफेक्शनी में डिग्री, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट हासिल करने के बाद रोजगार के कई रास्ते खुल जाते हैं। होटल या रेस्तरां, एयर केटरिंग, रेलवे केटरिंग, आर्मी केटरिंग, फूड प्रोसेसिंग कंपनीज, कंफेक्शनरीज, थीम रेस्तरां, मॉल्स, बेस किचन, बड़े अस्पताल, क्रूज लाइनर, कॉरपोरेट केटरिंग में नौकरी के अवसर उलब्ध हैं। यहाँ वेतन भी ठीक मिलता है। इनके अलावा, खाना-पान पर लेखन किया जा सकता है, किताबें लिखी जा सकती हैं, अपना रेस्तरां खोला जा सकता है। पर्यटन को लेकर बढ़ती गतिविधियों में इनका स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। लिहाजा, होटलों की भरमार है और कैरियर के लिहाज से आपार संभावनाएँ मौजूद हैं।

आय : होटल मैनेजमेंट में कार्य करने के बाद आपको किसी नामी संस्थान से इंटर्नशिप और ट्रेनिंग करनी होती है। फूड प्रोडक्शन मैनेजर की ट्रेनिंग लेने बाद आप कुछ समय के अनुभव के बाद 18 लाख से 30 लाख सालाना तक सैलरी उठा सकते हैं। हालांकि वेतन स्थान के लिहाज से अलग हो सकता है किंतु एक प्रशिक्षु फूड प्रोडक्शन मैनेजर को प्रति माह 10 हजार रुपये से लेकर 30 हजार रुपये तक मिल सकते हैं। कुछ अनुभव के बाद 50 हजार रुपये आसानी से मिलने लगते हैं और एक्जिक्यूटिव शेफ बन जाने पर तो कहने ही क्या, मामला लाखों तक जा पहुँचता है।

– **अमित सरोज,** नई दिल्ली

प्रमुख संस्थान

- नेशनल काउंसिल फॉर होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टैक्नोलॉजी, नोएडा www.nchmct.org
- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र www.kuk.ac.in
- द होटल स्कूल, नई दिल्ली www.thehotelschool.com
- एलबीआईआईएचएम, नई दिल्ली www.lbiihm.com

जाम्भाणी कुण्डलियां

(1)

धरम धरा पर धन्य है, जो सब रो करे विकास।
अभिमानी अळगौ रहै, अहम् आवे पास।
अहम् आवे पास, अपणा कई पराया।
आदर धरम अपार, संत ग्रंथ गुण गाया।
'ऊदा' हरि उम्मेद, सांचा करो सभी करम।
सुझी राखो सोच, ऊंचा-नीचा नह धरम।

(2)

सांच सदाई सांच है, आंच न आवै कोय।
छळ करै सब छागटा, जीवन अपनो खोय।
जीवन अपनो खोय, मिलै नह मतलब कांई।
पाणी बुझवै प्यास, मनु मन मलिनता नांई।
कह उद्धव कविराय, नर मन री करिये जाँच।
छळ छौड़ सांची कह, आंच नहीं आवै सांच।

(3)

पूरण पुरुष परमात्मा, परगट पूरो ग्यान।
हीरा विणजै वाणियो, समराथळ पर आन।
समराथळ पर आन, जम्भगुरु जग आवीया।
अंतर दरश अपार, परतक परगट पावीया।
कह उद्धव कविराय, अग्यानी नर अपूरण।
ग्यानी अरु गुणवान, पाय परमेसर पूरण।

(4)

आत्म ज्ञान अपार है, आत्म तत्व अनन्त।
लिखिया सोई लाभसी, सुमरे विरला संत।
सुमरे विरला संत, हरि विष्णु नाम विशेषा।
आत्म बोध अलेप, नर निर्विकार निशेषा।
कह उद्धव कविराय, मिलै'ह मनवा महात्म।
मानुष जीवन मांय, सत चित आनन्द आत्म।

(5)

दुष्ट दारुण दैत्यों को, दाटण आऊं दम्भ।
भगत भला जन भाइड़ा, फाड़ उबारूं थम्भ।
फाड़ उबारू थम्भ, परम भगत प्रहलादो।
सतजुग में हरि आप, कियो भगत सूँ वादो।
कह उद्धव कविराय, पुण्य करिये पुष्ट।
अवसर देऊं अवस, कर सकै कल्याण (भी) दुष्ट॥

(6)

हरे बिरख में हरि बसे, जंतु जीव अनाप।
हरि कंकैड़ी छांव में, जम्भगुरु जपता जाप।
जंभगुरु जपता जाप, हरि विष्णु नाम विशेषा।
विष्णु करै विश्वास, फैर नह रहै कुछ शेषा।
कह उद्धव कविराय, नरां सुकरत कर्म करे।
जीव रुखाळै जोर, अरु पेड़ न काटे हरै।

(7)

परिपूर्ण प्रकाशियो, दशों दिशा में जोर
विश्व विष्णु विस्तार है, व्यापक चारों ओर।
व्यापक चारों ओर, नवै द्वीप नरयाणो।
थरहर कांपै थम्भ, नरसिंह हरि पहचाणो।
कह उद्धव कविराय, जळ-थळ-नभ कांपै खरी।
पापी परलय होय, बात म्हारी मानो परी।

(8)

परिपूर्ण परमात्मा, प्रकाशित पुर जोर।
विष्णु विश्व विस्तार है, व्यापत चारों ओर।
व्यापत चारों ओर, गजब गीता में गायो।
कण-कण में कल्याण, वेद वजूद बतलायो।
'ऊदो' अनन्त अथाह, जल-थल नभ विष्णु पूर्ण।
खण्ड-खण्ड ब्रह्मण्ड, परमेश्वर परिपूर्ण।

(9)

गुरु की बात न टाळवै, गुरु पर करै गुरूर।
गुरु आज्ञा धारिये, बेड़ा पार जरूर।
बेड़ा पार जरूर, गुरुजी गजब गुणवाना।
सुगरा श्रेष्ठ सहाय, सतगुरु सहज सुजाना।
कह उद्धव कविराय, सुगरो सेवा करे शुरू।
नुगरा रहै निराश, गुणवानों का दास गुरु।

(10)

भगती हद भगवान री, जबरी दौरी जाण।
सुगरा सुरगा जावसी, नुगरा नरका जाण।
नुगरा नरका जाण, नर किवी कमाई हाथे।
संग्रह कियो शनाप, न कोई चाले साथे।
कह उद्धव कविराय, नुगर नर नाशै जगती।
गुणियां करियो गौर, भरम राखे हरि भगती।

-मास्टर उदयराज खिलेरी
गाँव-मेघावा, डाकघर-वीरावा
वाया-सांचोर, जिला-जालोर (राज.)
मो.: 09828751199

सात समुद्र पार भी हैं श्री गुरु जाम्भोजी के अनुयायी

HOW I BECAME BISHNOI

Interview of Ginette Lafleur, Quebec, Canada

Vikas - For how many years are you Bishnoi ?

Ginette- I adopted this way of living, Bishnoi four years ago.

Vikas - Are you Bishnoi?

Ginette - Yes, I am bishnoi by my works and act, not by birth and I am very proud on it.

Vikas - Where did you hear about the Bishnoi?

Ginette - I am a teacher. I told my student to write about their country of origin. A little girl from India asked me to help her find the name of a tree that grows in India. We were on internet and I saw "Bishnoism is an environmentalist religion." I wrote the name down not to forget it. Later, I read everything I could find.

Vikas - What did you read?

Ginette - I read the 29 commandments and the true story of the 363 Bishnoi that sacrificed their lives while protecting the trees that some people wanted to cut down. I read that men and women were equal. I also read that Bishnoism is a monotheist religion.

Vikas - Do you follow the 29 commandments?

Ginette - Yes I do. I do not drink alcohol, smoke or take drugs. I am vegetarian, I do not eat meat, poultry or fish. Every year, I plant one tree or more. I do not cut down healthy trees. I respect animals and insects. I drink purified water. Every day I feed about 15 homeless cats outside. A friend built a little shack that is heated in the winter for them. I also have my 6 cats in my house to feed. Many were unwanted or abandoned, etc.

Vikas - Do you do hawan pray etc.?

Ginette - Absolutely, I just make a fire and pray every day. Reciting "Om Vishnu-Om Vishnu" as you taught me earlier about this.

Vikas - Do you have any difficulties in following the 29 commandments?

Ginette - No. The only difficulties I have are that I am alone in Montreal and do not have literature. I would like to pray in a temple with people from the Bishnoi community. I have about 150 friends Bishnoi on Internet! They have been great teachers. They always answer all my questions on Bishnoism.

Vikas - Now you have online Literature Library, bishnoisect.com, Do you think this is beneficial for people like you?

Ginette - Yes absolutely, It contains almost all literature that I can count on to give me detailed information about Bishnoi way of life, its origin and the different principles. Without it I would be certainly a bit confused. I also like to follow what is happening in India with my Bishnoi Community.

Vikas - What were your first thoughts when you heard about "Bishnois environmentalist"?

Ginette - Firstly, I could not believe it. Religion usually never speaks about respect for all living creatures. I thought it was fabulous. Later I understood that the Bishnoi had survived in the desert because of their closeness with nature and that it was the only way to save our planet.

Vikas - Did you do Amavasya Fast also?

Ginette - No. I learn about it a few days ago from you. On last Amavasya, unfortunately I had to go on a little trip that was planned before and I couldn't fast. But I will fast every month starting from next month.

Vikas - Like 363 peoples who sacrificed their lives for trees and many other for trees and animals, if same situation occurs in front of you, will you save the trees or wild animals?

Ginette - I would surely hug trees or stay in front of the animals that God placed on my road to feed and protect. Fortunately, we are not in those years that I would have to give up my life.

Vikas - Thank you Ginette Ji, A Great Interview with you. Navan Parnam

Ginette - Jambho Ji ne Vishnu ne, I thank you.

- Vikas Bishnoi, Director
Mob.: 917015184834, +919466758300
admin@bishnoisect.com, bishnoisect.com

जांभोळाव मेला आयोजित

जांबा मेले में उमड़े श्रद्धालु, यज्ञ में दी आहुतियां धर्मसभा में शिक्षा, पर्यावरण व नशामुक्ति पर हुआ मंथन, कई प्रदेशों से आए श्रद्धालुओं ने लगाई पवित्र सरोवर में डुबकी।

17 मार्च, 2018 को जोधपुर जिले के जांबा गांव में जाम्भोलाव धाम पर चैत्री अमावस्या को आयोजित जांबा मेले में कई प्रदेशों से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां देकर व पवित्र सरोवर में डुबकी लगाकर खुशहाली की कामना की। मेले की पूर्वसंध्या पर रात्रि जागरण का आयोजन हुआ। बिश्नोई समाज के दर्शनार्थियों की भीड़ सुबह चार बजे से ही जुटनी शुरू हो गई।

यज्ञ व महाआरती से मेले की शुरुआत हुई। देर शाम तक श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। घी खोपरा से यज्ञ में आहुतियां देकर गुरु जंभेश्वर के 29 नियमों पर चलने का प्रण दोहराया। पूरा मेला परिसर दिनभर जांभोजी के जयघोष से गूंजायमान होता रहा। इस दौरान आयोजित धर्मसभा में फलोदी विधायक पब्बाराम विश्नोई ने कहा कि 29 नियमों का पालन करने वाले कभी दुखी नहीं हो सकते। जाम्भोलाव धाम की भूमि पवित्र है। महासभा अध्यक्ष हीराराम भंवाल ने युवा पीढ़ी के सुधार पर जोर दिया। फलोदी प्रधान अभिषेक भादू ने कहा कि युवा पीढ़ी को नशे से दूर रहना चाहिए। लोहावट प्रधान भागीरथ बेनीवाल ने कहा कि हमने जीवों व पेड़ों के लिए अपने प्राण दिए। सरकार उन बलिदानों को उचित सम्मान दे। जिला पार्षद रावल जाणी ने शिक्षा पर ध्यान देने का आह्वान किया। देहात जिला कांग्रेस महामंत्री किसनाराम बिश्नोई ने कहा कि बिश्नोई एक धर्म ही नहीं अपितु एक मानव कल्याण

का आंदोलन है। अगुणी संताश्रम के महंत भगवानदास, बलदेवानंद महाराज भोजासर,श्रीमहंत भजनदास, जांबा स्वामी बालकृष्ण महाराज आनंद प्रकाश, महासभा के उपाध्यक्ष हुकमाराम, राष्ट्रीय सचिव देवेंद्र बूड़िया, रूपाराम कालीराणा, जिला महासभा अध्यक्ष नारायण डाबड़ी, सत्यनारायण राव, सचिव पेमाराम सियाग, उपाध्यक्ष मोहनराम सारण, कृषि मंडी चेयरमैन जगराम विश्नोई, जीव रक्षा सभा के प्रदेश अध्यक्ष शिवराज जाखड़, सुनील विश्नोई सुरपुरा आदि मौजूद रहे।

प्लास्टिक मुक्त रहा मेला परिसर– 135 युवाओं ने किया रक्तदान पर्यावरण प्रेमी खम्मुराम बिश्नोई के नेतृत्व में टीम ने पर्यावरण चेतना रैली निकाली। पूरे परिसर को प्लास्टिक से मुक्त रखा। मारवाड़ अस्पताल जोधपुर के तत्वावधान मे आयोजित शिविर में 135 युवाओं ने रक्तदान किया।

–कैलाश बिश्नोई, जोधपुर

गुड़ी पड़वा पर बिश्नोई समाज ने मुम्बई में निकाली पर्यावरण रैली

मुंबई, 18 मार्च गुड़ी पड़वा हिंदू नव वर्ष के शुरूआत में विलेपार्ले स्थित बिश्नोई समाज ने विशाल रैली निकाली, यह रैली साईं बाबा मंदिर से होते हुए सदानंद रोड होते हुए हनुमान रोड पर समापन हुई, रैली में सुनील देवधर, पराग अलवानी विधायक, पूनम महाजन ने मोमेंटो देकर समाज के लोगों का स्वागत किया, बिश्नोई समाज ने भी साहित्य भेंट करके आभार प्रकट किया।

इस रैली का उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना था। बिश्नोई समाज पर्यावरण रक्षक समाज है बिश्नोई समाज हमेशा जीवों की रक्षा करते हैं बचाना है। बिश्नोई समाज ने आज से 288 वर्ष पहले राजस्थान के जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में पेड़ों के लिए माँ अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने पेड़ों के लिए हंसते-हंसते बलिदानी दे दी थी, उन्हीं की यादगार में विलेपार्ले बिश्नोई समाज लगातार 4 वर्षों से पर्यावरण जागरूकता रैली निकालते हैं। इस रैली में बड़ी संख्या में समाज के लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराई व पर्यावरण जागरूकता रैली निकाल कर लोगों को पर्यावरण व प्रकृति को बचाने का संदेश दिया।

जीवरक्षा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हरिराम वरड़, कालूराम

पेड़ों की रक्षा करते हैं, प्रकृति की रक्षा करते हैं, आज से 550 साल पहले गुरु महाराज जांभोजी ने 29 नियमों की आचार संहिता बनाकर बिश्नोई पंथ की स्थापना की थी, तब यह नियम इतना आवश्यक नहीं था पर, तब भी गुरु महाराज ने आने वाली पीढ़ियों को सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए 29 नियम की आचार संहिता बनाई। आज भारत देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व पर्यावरण को बचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। पर गुरु जाम्भोजी ने यह बात आज से 550 वर्ष पहले कह दी थी कि पर्यवारण को

मांझू, सीए किशोर साहू, हर्षवर्धन डुकिया, जगदीश बेनीवाल, भागीरथ जांगु, राकेश जैन, हरीश भाम्भू पत्रकार, जगदीश सारण, सुनील डूडी, सुरेश डूडी, बुधराम गोदारा, किशन गोदारा, सुनील गोदारा आदि सैकड़ों की संख्या में समाज के लोगों ने हिस्सा लिया। अंत में राजेश पुनिया व हरिराम गोदारा ने सबका आभार प्रकट किया।

-**हरीश बिश्नोई, मुम्बई**, मो. 9833248581

सबदवाणी के अंग्रेजी संस्करण का हुआ विमोचन

बीकानेर (25 मार्च, 2018)- जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा 25 मार्च को जयनारायण व्यास कॉलोनी स्थित अपने मुख्यालय पर एक ''पुस्तक विमोचन'' एवं ''अभिनन्दन समारोह'' रखा गया, जिसमें कैलगरी विश्वविद्यालय, केनेडा के प्रोफेसर एमरेटस डॉ. पृथ्वीराज बिश्नोई द्वारा अंग्रेजी में लिखित ''गुरु श्री जाम्भोजी एण्ड सबदवाणी'' ग्रंथ का विमोचन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री विजय बिश्नोई थे। समारोह की अध्यक्षता श्री हीराराम भंवाल एडवोकेट, अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने की। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सोनाराम बिश्नोई और रूड़कली के श्रीमहन्त शिवदास जी शास्त्री विशिष्ट अतिथि के रूप से सम्मिलित हुए।

समारोह में स्वागत भाषण देते हुए अकादमी की संरक्षिका डॉ. सरस्वती बिश्नोई ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान की वाणी का सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद कर डॉ. पृथ्वीराज ने हम सबको लाभान्वित व गौरवान्वित किया है, इसलिये जाम्भाणी साहित्य अकादमी आपका अभिनन्दन करती है। श्रीमती बिश्नोई ने आगे कहा कि इस पुस्तक से गुरु जाम्भोजी की वाणी सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित होगी, जिससे विश्व भी उनकी उपयोगी शिक्षा का लाभ उठा सकेगा। समारोह के अध्यक्ष श्री हीराराम भंवाल एडवोकेट ने कहा कि इस पुस्तक के माध्यम से एक चिर प्रतिक्षित मांग पूरी हुई है। अहिन्दी भाषी लोगों में गुरु जाम्भोजी की वाणी के प्रसार का द्वार खुल गया है। आपने सम्पूर्ण समाज की ओर से लेखक महोदय का धन्यवाद किया।

पुस्तक के लेखक डॉ. पृथ्वीराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि गुरु जाम्भोजी की वाणी बहुत ही गूढ़ गम्भीर है। उसमें मानव जीवन की सभी समस्याओं का समाधान निहित है। इस वाणी का प्रचार-प्रसार पूरी मानवता के लिये लाभकारी है परन्तु इसका अंग्रेजी अनुवाद न होने के कारण इसका प्रचार-प्रसार नहीं हो सका। आने वाली पीढ़ियां और विश्व गुरु जाम्भोजी के विचारों से अवगत हो सके, इसलिये मैंने यह कार्य किया है। मुख्य अतिथि जस्टिस विजय बिश्नोई ने कहा कि गुरु जाम्भोजी की वाणी का अनुवाद कर डॉ. बिश्नोई ने इसके वैश्विक प्रचार-प्रसार का द्वार खोल दिया है। अब इसके अन्य भाषाओं में अनुवाद की राह प्रशस्त हुई है। लेखक और प्रकाशक इसके लिये बधाई के पात्र हैं। समारोह में बोलते हुए विशिष्ट अतिथि डॉ. सोनाराम बिश्नोई ने कहा कि राजस्थानी और अंग्रेजी दोनों की समृद्ध भाषा है। गुरु जाम्भोजी की वाणी मानवता की अमूल्य धरोहर है जिसका एक समर्थ भाषा से दूसरी समर्थ भाषा में अनुवाद होना युगान्तरकारी घटना है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने सबदवाणी की सम्पादन एवं टीका परम्परा पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. ओमप्रकाश भादू ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में गुरु जाम्भोजी की वाणी एवं 29 धर्म नियमों पर प्रकाश डालते हुए इन्हें कवच के समान बताया जो सभी समस्याओं से रक्षा करती है। श्री आर.के. बिश्नोई ने डॉ. पृथ्वीराज जी के व्यक्तित्व व पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि श्रीमहन्त शिवदास शास्त्री, रूड़कली ने कहा कि सन्तों ने इस सबदवाणी को सम्भाल कर रखा है। अंग्रेजी भाषा में अनुवाद होने पर यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचेगी। इससे हमें संतोष होगा। सेवकदल अध्यक्ष श्री रामसिंह कस्वां ने सबदवाणी के अंग्रेजी अनुवाद पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे विदेशी ही नहीं दक्षिण भारत के लोग भी लाभान्वित होंगे।

समारोह को सम्बोधित करते डॉ. पृथ्वीराज बिश्नोई

मंच संचालन अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. बनवारीलाल सहू ने दिया। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेवी श्री राजाराम धारणियां, श्री रामस्वरूप धारणियां, युवा नेता बिहारीलाल बिश्नोई, अकादमी उपाध्यक्ष डॉ. इन्द्रा बिश्नोई, सचिव मूलाराम, सूबेदार श्री केहराराम, श्री मांगीलाल अज्ञात, श्री शिवराज जाखड़ नोखा, श्री बी. आर. डेलू, पंजाब से श्री सुरेन्द्र गोदारा, मध्यप्रदेश से बाबूलाल गोदारा, पूर्व प्रधान श्री सहीराम भादू, सहित बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

भावुक हुए बिश्नोई दम्पत्ति

समारोह में कई वर्षों बाद जन्मभूमि बीकानेर में आकर डॉ. पृथ्वीराज व उनकी धर्मपत्नी उर्मिला बिश्नोई भाव-विभोर हो गये। उन्होंने कहा कि मिट्टी का प्यार उन्हें खींच लाया। वे इतने वर्ष बाहर रहकर भी अपनी जड़ों को नहीं भूले। श्रीमती उर्मिला जी ने समारोह में लय सहित सरस्वती वन्दना प्रस्तुत कर सभी को भाव विभोर कर दिया। उल्लेखनीय है कि कनाडा के कैलेगरी श्विविद्यालय में प्रोफेसर (डॉ.) पृथ्वीराज की मातृभूमि बीकानेर है।

क्या है पुस्तक में

इस पुस्तक में अंग्रेजी भाषा में गुरु जाम्भोजी की जीवनी, सबदवाणी की व्याख्या तथा अन्त में बिश्नोई तीर्थ स्थानों व बलिदानों की जानकारी है। पुस्तक का प्रकाशन जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने किया है जिसका मूल्य मात्र 150 रुपये है।

पुस्तक का विमोचन करते लेखक एवं अतिथिगण

समारोह में उपस्थित साहित्य प्रेमी

अभिनन्दन :

इस समारोह में जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने डॉ. पृथ्वीराज बिश्नोई व डॉ. सोनाराम बिश्नोई को अभिनन्दन पत्र व शॉल देकर सम्मानित किया।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
हिसार मो.: 09467694029

सूचना

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अमर ज्योति का जून अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। लेखकों से निवेदन है कि वे पर्यावरण से सम्बन्धित लेख, कविता, कहानी, गीत, स्लोगन आदि 10 मई, 2018 तक भेजने की कृपा करें। सामग्री अमर ज्योति की ईमेल : editor@amarjyotipatrika.com पर भी भेजी जा सकती है।

-सम्पादक

श्री जम्भेश्वर मंदिर पंचकूला का 13वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

श्री बिश्नोई सभा, हिसार-शाखा पंचकूला द्वारा सैक्टर 15, पंचकूला स्थित बिश्नोई भवन एवं श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान मंदिर में 13वाँ स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें विशाल जागरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व उप-मुख्यमंत्री श्री चन्द्र मोहन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा, आईएएस अधिकारी मोनिका मलिक, राजीव शर्मा आईएएस, अतिरिक्त पुलिस महानिदेश राजवीर देशवाल, आरसी शर्मा, अधीक्षण अभियंता श्री मनपाल, प्रमुख अभियंता बागवानी विभाग हरियाणा से श्री हरदीप मलिक, सिंचाई विभाग हरियाणा के चीफ इंजीनियर सुभाष बिश्नोई सहित बिश्नोई सभा के सभी पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी के सभी सदस्यों एवं आम सदस्यों के अतिरिक्त लगभग 550 लोगों ने भाग ले मत्था टेक कर श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का आशीर्वाद लिया।

श्री बिश्नोई सभा, हिसार-शाखा पंचकूला के प्रधान श्री अचिंत राम गोदारा ने बताया कि जागरण में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान से भी सैकड़ों की संख्या में धर्म प्रेमी लोगों ने जागरण सुनकर आध्यात्मिक लाभ उठाया। भवन एवं मंदिर के स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर हर वर्ष श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के भजन, साखी और सबदों के साथ विशाल जागरण का आयोजन किया जाता है। इस बार के रात्रि जागरण के गायक और कलाकार सदलपुर श्री ओम प्रकाश राहड़ की अगुवाई में सर्वश्री नेकीराम भाम्भू, हनुमान गोदारा, अमन कालीराणा, रमेश बैनीवाल, संजय थापन इत्यादि थे।

अगले दिन प्रात: विशाल हवन, कलश स्थापित करने बाद सभी ने श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर एवं बिश्नोई भवन, सैक्टर 15, पंचकूला का स्थापना दिवस के अवसर पर प्रसाद ग्रहण किया गया। हर वर्ष की तरह इस बार भी सभासदों एवं बिश्नोईजनों के साथ-साथ अन्य परिवारों के प्रमुख लोगों ने भी जागरण का लाभ उठाया। आज 13 वर्ष पूर्व इस दिवस को इस भवन की नींव रखी गई थी। प्रतिवर्ष श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर एवं बिश्नोई भवन, पंचकूला का स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से भव्य रूप में मनाया जाता है।

उल्लेखनीय है कि भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर एवं श्री बिश्नोई भवन की आधारशिला तत्कालीन उप-मुख्यमंत्री, हरियाणा श्री चन्द्रमोहन जी के कर-कमलों द्वारा 2006 को प्रात:काल आयोजित विशाल हवन के बाद श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के जयकारों के साथ रखी थी। इससे पूर्व संध्या पर

रात्रि श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का विशाल जागरण का आयोजन किया गया था। उस शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा बिश्नोईरत्न चौधरी भजनलाल जी ने की थी। समारोह का आयोजन हिसार सभा के नेतृत्व में स्थानीय लोगों द्वारा मिलकर किया गया था। उस शिलान्यास समारोह में शिरोमणि बिश्नोई समाज के हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, इत्यादि क्षेत्रों के लोगों ने भाग लिया था। स्थापना के 12 वर्ष पूर्ण होने पर 13वां स्थापना दिवस 2018 में मनाया गया।

प्रधान श्री अचिंतराम के नेतृत्व में श्री बिश्नोई सभा, हिसार-शाखा पंचकूला ने उल्लेखनीय प्रगति के लिए शानदार एवं ईमानदारी के साथ कार्य किया है और अब भी सभा उन्हीं के नेतृत्व में निरंतर कार्य कर रही है। सभा के प्रधान श्री अचिन्तराम गोदारा ने बताया कि बैठक में श्री बिश्नोई सभा, हिसार के नेतृत्व में शिरोमणी तीर्थ श्री जम्भसरोवर, जाम्भा जिला जोधपुर (राजस्थान) में निर्माणाधीन हरियाणा भवन के लिए हिसार सभा को भी कुछ धन राशि भेजने के लिए प्रावधान किया गया है। इन सबके अतिरिक्त सभा के पदाधिकारियों एंव कार्यकारिणी सदस्यों के द्वारा प्रधान की अनुमति से रखे जाने वाले अन्य विषयों पर भी विचार किया गया।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई, हिसार
मो.: 09467694029

तीर्थ शिरोमणि जाम्भोलाव

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

GURU JAMBHESHWAR SR. SECONDARY SCHOOL

ADMISSION OPEN
Nur. to 10+1 (Science, Commerce, Arts)

Facilities

- Smart Classes
- Transport Services
- R.O. Water-Coolers
- Well Established Library
- High Quality Teaching Methods
- Nature Friendly Campus
- Clean Washrooms
- Well Furnished & Spacious Classrooms
- Modern Laboratory System
- Whole Campus Fitted with CCTV Cameras

Jawahar Nagar, Hisar-125001 (Haryana)

✆ 8168758606, 8607918253, 9812108255 ✉ gurujambheshwar029@gmail.com

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।